पुतली कला
The Art of Puppetry
1

Booklet

विश्व के विभिन्न भागों में पुतली कला में जो अभिनव प्रयोग हुए हैं वह उसी का परिणाम है कि आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पेशेवर पुतली नाटक दल प्रदर्शन कर रहे हैं। पुतलियों को परिचालन के आधार पर मुख्यत: चार श्रेणियों में बांटा जा सकता है। ये हैं–धागा पुतली, छाया पुतली, छड़ पुतली तथा दस्ताना पुतली। पुतलियों के ये रूप पारंपरिक हैं। अंगुली और मुट्ठी पुतली तथा जल पुतली इत्यादि भी लोकप्रिय हैं।

आज के आधुनिक समय में सारे विश्व के शिक्षाविदों ने संचार माध्यम रूप में पुतलियों की उपयोगिता के महत्व को अनुभव किया है। भारत में आज अनेक व्यक्ति तथा संस्थाएं शैक्षणिक संकल्पनाओं के संप्रेषण में पुतलियों के इस्तेमाल करने में छात्रों एवं अध्यापकों को सम्मिलित कर रही हैं।

शारीरिक एवं मानसिक रूप से विकलांग बच्चों को अपने शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए प्रेरित करने में पुतली कला का सफलता के साथ उपयोग किया गया है। अपनी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करने संबंधी कार्यक्रम काफी सहायक साबित हुए हैं। साथ ही इन कार्यक्रमों का लक्ष्य छात्रो में शब्द, आकार, रंग और गति के सौंदर्य के प्रति संवेदना जागृत करना भी है। पुतलियों के निर्माण तथा उनके माध्यम से संप्रेषण करने में जो सौंदर्य-आनंद मिलता है वह बच्चों के व्यक्तित्व के चहुंमुखी विकास में सहायक होता है।

भारत में पारंपरिक पुतली नाटकों की कथावस्तु पौराणिक साहित्य, स्थानीय दंत कथाओं और किंवदंतियों से ली जाती रही है तथा बदले में उनमें चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य और नाटक आदि की रचनात्मक अनुभूतियों का समावेश होता रहा है। पुतली कार्यक्रमों को प्रस्तुत करने में एक साथ अनेक लोगों के सृजनात्मक प्रयासों की जरूरत पड़ती है।

भारत में लगभग सभी प्रकार की पुतलियां पाई जाती हैं तथा पारंपरिक मनोरंजन में सदियों से पुतलीकला का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। पारंपरिक नाटक की भांति ही पुतली नाटक महाकाव्यों और दंत कथाओं पर आधारित होते हैं तथा देश के विभिन्न प्रांतों की पुतलियों की अपनी एक खास पहचान होती है। उनमें चित्रकला और मूर्तिकला की क्षेत्रीय शैली झलकती है।

दस्ताना पुतली

दस्ताना पुतली को भुजा, कर या हथेली पुतली भी कहा जाता है। इन पुतलियों का मस्तक पेपर मेशे (कुट्टी), कपड़े या लकड़ी का बना होता है तथा गर्दन के नीचे से दोनों हाथ बाहर निकलते हैं। शेष शरीर के नाम पर केवल एक लहराता घाघरा होता है। ये पुतलियां वैसे तो निर्जीव गुड़ियों जैसी होती हैं पर निपुण संचालक के हाथों में पहुंचते ही अनेक गतिविधियों को सक्षमता से प्रस्तुत करती हैं। इनके परिचालन की विधि अत्यंत सरल है। हाथों से गतिविधियों पर नियंत्रण रखा जाता है। पहली अंगुली मस्तक में जाती है तथा मध्यमा और अंगूठा पुतली की दोनों भुजाओं में। इस प्रकार अंगूठे और दो अंगुलियों की सहायता से दस्ताना पुतली सजीव हो उठती है।

भारत में दस्ताना पुतली की परम्परा उत्तर प्रदेश, ओड़िशा, पश्चिमी बंगाल और केरल में लोकप्रिय है। उत्तर प्रदेश के दस्ताना पुतली नाटक सामाजिक विषय वस्तु प्रस्तुत करते हैं तो ओड़िशा में राधा-कृष्ण की कहानियों पर ये नाटक आधारित होते हैं। ओड़िशा में संचालक एक हाथ से ढोलक बजाता है और दूसरे हाथ से पुतले का संचालन करता है। संवाद बोलना, पुतली का संचालन और ढोलक की थाप सुन्दर रूप से क्रमानुसार होता है और एक नाटकीय वातावरण की सृष्टि होती है।

A variety of innovations in puppetry in different parts of the world have resulted in professional puppet theatre groups performing on international forums. Puppets can be broadly classified into four categories based on the mode of manipulation. These are marionettes, shadow puppets, rod puppets and glove puppets. Finger and fist puppets, humanettes and water puppets are also some of the popular forms of puppetry today.

In modern times, educationists all over the world have realised the potential of puppetry as a medium for communication. Many institutions and individuals in India are involving students and teachers in the use of puppetry for communicating educational concepts.

Puppetry has been successfully used to motivate emotionally and physically handicapped students to develop their mental and physical faculties. Awareness programmes about the conservation of the natural and cultural environment have also proved to be useful. These programmes aim at sensitising the students to the beauty in word, sound, form, colour and movement. The aesthetic satisfaction derived from making of puppets and communicating through them helps in the all round development of the personality of the child.

Stories adapted from Puranic literature, local myths and legends usually form the content of traditional puppet theatre in India which, in turn, imbibes elements of all creative expressions like painting, sculpture, music, dance, drama, etc. The presentation of puppet programmes involves the creative efforts of many people working together.

Almost all types of puppets are found in India. Puppetry throughout the ages has held an important place in traditional entertainment. Like traditional theatre, themes for puppet theatre are mostly based on epics and legends. Puppets from different parts of the country have their own identity. Regional styles of painting and sculpture are reflected in them.

Glove Puppets

Glove puppets, are also known as sleeve, hand or palm puppets. The head is made of either papier mache, cloth or wood, with two hands emerging from just below the neck. The rest of the figure consists of a long flowing skirt. These puppets are like limp dolls, but in the hands of an able puppeteer, are capable of producing a wide range of movements. The manipulation technique is simple, the movements are controlled by the human hand, the first finger inserted in the head and the middle finger and the thumb are the two arms of the puppet. With the help of these three fingers, the glove puppet comes alive.

The tradition of glove puppets in India is popular in Uttar Pradesh, Odisha, West Bengal and Kerala. In Uttar Pradesh, glove puppet plays usually present social themes, whereas in Odisha such plays are based on stories of Radha and Krishna. In Odisha, the puppeteer plays on the *dholak* with one hand and manipulates the puppet with the other. The delivery of the dialogues, the movement of the puppet and the beat of the *dholak* are well synchronised and create a dramatic atmosphere.

केरल में पारंपरिक पुतली नाटकों को पावाकथकली कहा जाता है। इसका प्रार्दुभाव 18वीं शताब्दी में वहां के प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य नाटक कथकली के पुतली-नाटकों पर पड़ने वाले प्रभाव के कारण हुआ। पावाकथकली में पुतली की लंबाई एक–दो फीट के बीच होती है। मस्तक तथा दोनों हाथ लकड़ी से बना कर एक मोटे कपड़े से जोड़े जाते हैं। फिर एक छोटे से थैले के रूप में सिए जाते हैं। पुतली के चेहरे के अलंकरण में रंग, चमकीले टीन के टुकड़े तथा मोरपंखों का उपयोग किया जाता है। परिचालक उस थैली में अपना हाथ डालकर पुतली के मस्तक और दोनों भुजाओं का संचालन करता है। इस प्रस्तुति के समय चेंडा, चेनगिल, इलाथलम वाद्य-यंत्रों तथा शंख का उपयोग किया जाता है। केरल के ये पुतली-नाटक रामायण तथा महाभारत की कथाओं पर आधारित होते हैं।

धागा पुतली

भारत में धागा पुतलियों की परंपरा अत्यंत प्राचीन तो है ही साथ ही समृद्ध भी। अनेक जोड़ युक्त अंग तथा धागों द्वारा संचालन इन्हें अत्यंत लचीलापन प्रदान करते हैं। जिस कारण ये पुतलियाँ काफी लचीली होती हैं। राजस्थान, ओड़िशा, कर्नाटक और तमिलनाडु ऐसे प्रांत हैं जहां यह पुतली कला पल्लवित हुई।

राजस्थान की परम्परागत पुतलियों को कठपुतली कहते हैं। काठ के एक टुकड़े से तराश कर बनाई गई ये पुतलियां रंगबिरंगे पहनावे में बड़ी गुड़ियों के समान लगती है। उनकी वेशभूषा और मुकुट मध्य कालीन राजस्थानी शैली में होती है जो आज तक प्रचलित है। अत्यन्त नाटकीय क्षेत्रीय संगीत कठपुतली नृत्य की संगत करता है। इन के अंडाकार मुख, मछलियों जैसी बड़ी-बड़ी आँख, कमानी जैसी भौं और बड़े-बड़े होंठ आदि कुछ विशिष्ट लक्षण हैं। इसके साथ ही ये पुतलियाँ लम्बा पुछल्ला लहँगा पहनती है और इनके पैरों में जोड़ नहीं होते। पुतली संचालक अपनी उंगलियों से बंधे दो या पांच धागों से उनका संचालन करता है।

ओड़िशा की धागा पुतली को कुनढेई कहते हैं। ये हल्की लकड़ी से बनी होती हैं और इनके पैर नहीं होते तथा ये पुछल्ला लहँगा पहने होती हैं। इन पुतलियों में अनेक जोड़ होते हैं। इसी कारण इनका संचालन सरल है। पुतली संचालक साधारणत: एक लकड़ी के तिकोने फ्रेम को पकड़े रहता है जिस पर संचालन करने के लिए धागे बंधे होते हैं। परम्परागत जात्रा नाटक के अभिनेताओं के भांति कुनढेई की वेशभूषा होती है। क्षेत्र की प्रसिद्ध धुनों से ही संगीत लिया जाता है और कभी-कभी ओडिसी नृत्य के संगीत का गहरा प्रभाव दिखता है।

कर्नाटक की धागा पुतली को गोम्बेयेट्टा कहते हैं। गोम्बेयेट्टा का सम्बन्ध कर्नाटक के लोकनृत्य *यक्षगान* से है इसी कारण यह उससे काफी साम्यता रखता है। गोम्बेयेट्टा पुतलियों की आकृतियां अत्यंत सुसज्जित होती हैं और पैर, कंधे, कोहनी, कूल्हे और घुटने में जोड़ होते हैं। इनका संचालन फ्रेम से बंधे हुए पांच से सात धागों से होता है। दो तीन संचालकों के एक साथ संचालन द्वारा पुतली की कुछ जटिल क्रियाओं का प्रदर्शन भी किया जाता है। गोम्बेयेट्टा में *यक्षगान* के प्रसंगों को प्रदर्शित किया जाता है। साथ में बजने वाला संगीत नाटकीय होने के साथ-साथ लोक संगीत तथा शास्त्रीय संगीत का सुंदर समन्वित रूप होता है।

छड़ और धागा पुतली की तकनीक तमिलनाडु की 'बोम्मालट्टा' पुतली में एक साथ मिलती है। ये लकड़ी से बनी होती हैं और संचालन करने के धागे एक लोहे के रिंग से बंधे रहते हैं जिसे कि पुतली संचालक मुकुट की तरह अपने सिर पर धारण किए रहते हैं।

कुछ पुतलियों की हथेलियों और हाथों में जोड़ होते हैं जिनका संचालन छड़ों से होता है। *बोम्मालट्टा* पुतली आकार में बड़ी और भारी होती है और भारतीय परम्परागत पुतलियों में सबसे सुस्पष्ट होती है।

In Kerala, the traditional glove puppet play is called Pavakathakali. It came into existence during the 18th century due to the influence of Kathakali, the famous classical dance drama of Kerala, on puppet performances. In Pavakathakali, the height of a puppet varies from one foot to two feet. The head and the arms are carved of wood and joined together with thick cloth, cut and stitched into a small bag. The face of the puppets are decorated with paints, small and thin pieces of gilded tin, the feathers of the peacock, etc. The manipulator puts his hand into the bag and moves the hands and head of the puppet. The musical instruments used during the performance are *Chenda, Chengila, Ilathalam* and *Shankha*. The theme for Glove puppet plays in Kerala is based on the episodes from either the Ramayana or Mahabharata.

String Puppets

India has a rich and ancient tradition of string puppets or marionettes. Marionettes having jointed limbs controlled by strings allow far greater flexibility and are, therefore, the most articulate of the puppets. Rajasthan, Odisha, Karnataka and Tamil Nadu are some of the regions where this form of puppetry has flourished.

The traditional marionettes of Rajasthan are known as Kathputli. Carved from a single piece of wood, these puppets are like large dolls that are colourfully dressed. Their costumes and headgears are designed in the medieval Rajasthani style of dress, which is prevalent even today. The Kathputli is accompanied by a highly dramatised version of the regional music. Oval faces, large eyes, arched eyebrows and large lips are some of the distinct facial features of these string puppets. These puppets wear long trailing skirts and do not have legs. Puppeteers manipulate them with two to five strings which are normally tied to their fingers and not to a prop or a support.

The string puppets of Odisha are known as Kundhei. Made of light wood, the Odisha puppets have no legs but wear long flowing skirts. They have more joints and are, therefore, more versatile, articulate and easy to manipulate. The puppeteers often hold a wooden prop, triangular in shape, to which strings are attached for manipulation. The costumes of Kundhei resemble those worn by actors of the Jatra traditional theatre. The music is drawn from the popular tunes of the region and is sometimes influenced by the music of Odissi dance.

The string puppets of Karnataka are called Gombeyatta. They are styled and designed like the characters of Yakshagana, the traditional theatre form of the region. The Gombeyatta puppet figures are highly stylized and have joints at the legs, shoulders, elbows, hips and knees. These puppets are manipulated by five to seven strings tied to a prop. Some of the more complicated movements of the puppet are manipulated by two to three puppeteers at a time. Episodes enacted in Gombeyatta are usually based on Prasangas of the Yakshagana plays. The music that accompanies is dramatic and beautifully blends folk and classical elements.

Puppets from Tamil Nadu, known as Bommalattam combine the techniques of both rod and string puppets. They are made of wood and the strings for manipulation are tied to an iron ring which the puppeteer wears like a crown on his head.

एक पुतली लगभग साढ़े चार फीट ऊंची होती है तथा उसका वजन दस किलो के आसपास होता है। इस नाट्य विधा के प्रारंभिक कार्य विनायक पूजा, कोमली, अमनाट्टम तथा पुसेकनाट्टम आदि चार भागों में विभक्त रहते हैं।

छड़ पुतली

छड़ पुतली वैसे तो दस्ताना पुतली का अगला चरण है लेकिन यह उससे काफी बड़ी होती है तथा नीचे स्थित छड़ों पर आधारित रहती है और उसी से संचालित होती है। पुतलीकला का यह रूप आज पश्चिमी बंगाल तथा ओड़िशा में पाया जाता है। पश्चिमी बंगाल के नादिया जिले में आदमकद पुतलियां होती थी जैसी कि जापान की बनराकू। लेकिन पुतलियों का यह रूप अब विलुप्त हो गया है। पश्चिमी बंगाल की शेष प्रचलित पुतलियां तीन-चार फुट लंबी होती हैं तथा वहां के लोक-नाटक जात्रा के पात्रों की भांति उनके भी परिधान होते हैं। प्राय: इनमें तीन जोड़े होते हैं। मुख्य छड़ पर आधारित मस्तक गर्दन से जुड़ा होता है तथा दो छड़ों से जुड़े हाथ कंधे से मिले होते हैं। इनके संचालन की विधि रोचक होने के साथ-साथ अत्यंत रंगमंचीय होती है। संचालक की कमर से बांस की टोपी बंधी रहती है तथा उस पर पुतलियों से जुड़ी छड़ें आधारित होती हैं। प्रत्येक पुतली का संचालक आदमकद पर्दे के पीछे खड़ा रह कर स्वयं हलचल और नृत्य करता है जिससे उसके क्रिया-कलाप पुतलियों में हस्तांतरित होते रहते हैं। इनके साथ ही संचालक गीत गाता हुआ गद्यात्मक संवादों को भी बोलता है। मंच के साथ बैठे हुए तीन-चार संगीतकार ढोलक, हारमोनियम तथा झांझ बजाते हुए संगति करते हैं। लोक नाट्य जात्रा से यह सब काफी साम्यता रखता है।

ओड़िशा की छड़ पुतलियां आकार में छोटी लगभग 12 से 18 इंच लंबी होती हैं। उनमें भी जोड़ तो तीन ही होते हैं लेकिन उनके हाथ छड़ों के बजाए धागों से बंधे होते हैं। इस प्रकार वहां पर छड़ पुतलियां, धागा तथा छड़ पुतलियों का समन्वित रूप होती हैं। पुतली संचालक पर्दे के पीछे जमीन पर बैठकर उनका संचालन करते हैं।

गद्यात्मक संवाद कभी-कभार ही इस्तेमाल होते हैं। ज्यादातर संवाद गेय होते हैं। संगीत लोक धुनों तथा शास्त्रीय ओड़िसी धुनों का समन्वित रूप होता है। संगीत का आरंभ स्तुति से होता है तथा बाद में नाटक प्रस्तुत किया जाता है।

पश्चिम बंगाल तथा आंध्र-प्रदेश की पुतलियों की तुलना में ओड़िशा की पुतलियां काफी छोटी होती हैं तथा पुतली नाटकों में गद्यात्मक संवाद नहीं होते।

छाया पुतली

भारत में अनेक प्रकार की छाया पुतलियों का प्रचलन है और विभिन्न प्रांतों में इसकी अनेक शैलियां विद्यमान हैं।

छाया पुतलियां चपटी होती हैं, अधिकांशत: वे चमड़े से बनाई जाती हैं। इन्हें पारभाषी बनाने के लिए संशोधित किया जाता है। पर्दे को पीछे से प्रदीप्त किया जाता है और पुतली का संचालन प्रकाश स्रोत तथा पर्दे के बीच से किया जाता है। दर्शक पर्दे के दूसरे तरफ से छायाकृतियों को देखते हैं। ये छायाकृतियां रंगीन भी हो सकती हैं। छाया पुतली की यह परंपरा ओड़िशा, केरल, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में प्रचलित है।

A few puppets have jointed arms and hands, which are manipulated by rods. The Bommalattam puppets are the largest, heaviest and the most articulate of all traditional Indian marionettes. A puppet may be as big as 4.5 feet in height weighing about ten kilograms. Bommalattam theatre has elaborate preliminaries which are divided into four parts—Vinayak Puja, Komali, Amanattam and Pusenkanattam.

Rod Puppets

Rod puppets are an extension of glove-puppets, but often much larger and supported and manipulated by rods from below. This form of puppetry now is found mostly in West Bengal and Odisha. In Nadia district of West Bengal, rod-puppets used to be of human size like the Bunraku puppets of Japan. This form is now almost extinct. The Bengal rod-puppets which survive are about 3 to 4 feet in height and are costumed like the actors of Jatra, a traditional theatre form prevalent in the State. These puppets have mostly three joints. The heads, supported by the main rod, is joined at the neck and both hands attached to rods are joined at the shoulders. The technique of manipulation is interesting and highly theatrical. A bamboo-made hub is tied firmly to the waist of the puppeteer on which the rod holding the puppet is placed. The puppeteers each holding one puppet, stand behind a head-high curtain and while manipulating the rods also move and dance imparting corresponding movements to the puppets. While the puppeteers themselves sing and deliver the stylized prose dialogues, a group of musicians, usually three to four in number, sitting at the side of the stage provide the accompanying music with a drum, harmonium and cymbals. The music and verbal text have close similarity with the Jatra theatre.

The Odisha Rod puppets are much smaller in size, usually about twelve to eighteen inches. They also have mostly three joints, but the hands are tied to strings instead of rods. Thus elements of rod and string puppets are combined in this form of puppetry. The technique of manipulation is somewhat different. The Odisha rod-puppeteers squat on the ground behind a screen and manipulate. Again it is more operatic in its verbal contents since impromptu prose dialogues are infrequently used. Most of the dialogues are sung. The music blends folk tunes with classical Odissi tunes. The music begins with a short piece of ritual orchestral preliminary called *Stuti* and is followed by the play.

The puppets of Odisha are smaller than those from Bengal or Andhra Pradesh. Rod puppet shows of Odisha are more operatic and prose dialogues are seldom used.

Shadow Puppets

India has a richest variety and types and styles of shadow puppets.

Shadow puppets are flat figures. They are cut out of leather, which has been treated to make it translucent. Shadow puppets are pressed against the screen with a strong source of light behind it. The manipulation between the light and the screen make silhouettes or colourful shadows, as the case may be, for the viewers who sit in front of the screen. This tradition of shadow puppets survives in Odisha, Kerala, Andhra Pradesh, Karnataka, Maharashtra and Tamil Nadu.

पुतली बनाने के लिए पशुओं की खाल को सावधानी से चुना जाता है और पारभासी बनाने के लिए संशोधित किया जाता है। संशोधन की विधि हर प्रान्त में अलग होती है। सावधानी से चमड़े पर आकृति की रूप रेखा बनाई जाती है। पहनावा और आभूषणों को चमड़े में सूक्ष्म छिद्रण से विशिष्टता से उभारा जाता है। पुतली बनाना एक बहुत ही सविज्ञ कला है।

ओड़िशा और केरल की छाया पुतली नाटक की विषयवस्तु अधिकतर रामायण से होता है जबकि आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में महाभारत और प्रादेशिक अनुश्रुतियों पर आधारित होती हैं।

कर्नाटक में छाया पुतली को तोगलु गोम्बेयेट्टा कहते हैं। ये साधारणत: आकार में छोटी होती हैं। सामाजिक परिवेश के अनुसार पात्रों के आकार बड़े-छोटे होते हैं। जैसे राजाओं और धार्मिक पात्रों के आकार बड़े होते हैं जबकि आम जनता और नौकरों के आकार छोटे होते हैं।

आन्ध्र प्रदेश की छाया नाटक को *तोलु बोम्मालट्टा* कहते हैं तथा इनकी परंपरा अत्यंत समृद्ध है। पुतलियाँ आकृति में बड़ी होती हैं और इनकी कमर, गर्दन, कंधा और घुटनों में जोड़ होते हैं। पुतलियाँ दोनों तरफ से रंगी जाती है जिससे पर्दे पर रंगीन छाया पड़ती है।

पुतली नाटकों का संगीत मुख्यत: इस क्षेत्र का शास्त्रीय संगीत होता है तथा उनकी कथाएं रामायण, महाभारत और पुराणों की होती है।

ओड़िशा की रावणछाया सभी में अत्यंत नाटकीय होती है। पुतलियां एकहरी होती हैं तथा उनमें कोई संधि नहीं होती। साथ ही चूंकि वे रंगीन भी नहीं होती इस कारण पर्दे पर उनकी छाया श्वेत-श्याम होती है। पुतलियों में जोड़ न होने के कारण उनका संचालन दक्षता से करना पड़ता है। ये पुतलियां मृग-चर्म की बनी होती हैं तथा इनका रूप अत्यंत नाटकीय होता है। मानव एवं पशु चरित्रों के साथ-साथ वृक्ष, पर्वत तथा रथ आदि भी इस्तेमाल किए जाते हैं। यद्यपि रावणछाया पुतलियां अपने आकार में दो फीट बड़ी नहीं होती और उनके घुटने भी जोड़ युक्त नहीं होते लेकिन फिर भी उनकी छाया एकदम लयात्मक एवं संवेदनशील होती है।

संगीत साधारण होता है तथा विषय-वस्तु भगवान राम की कथा होती है।

केरल का पारंपरिक पुतली नाटक थोलपावाकूथू कहलाता है तथा हमेशा रामायण ही इस की कथावस्तु होती है। इसे विशेष तौर पर मंदिरों में बनाए गए कूथूमदम नाट्यशाला में मंचित किया जाता है। इसकी पुतलियां भी मृग-चर्म की बनी होती है। चमड़े पर आकृतियों को रेखांकित करके काटा जाता है तथा उन्हें बिंदुओं, रेखाओं और छिद्रों से सजाया जाता है। फिर उन्हें विभिन्न रंगों से रंगा जाता है। सफेद पर्दे को दीपकों की सहायता से प्रकाशित किया जाता है और इन आकृतियों की छाया पर्दे पर प्रक्षेपित की जाती है।

इस नाटक के साथ मुख्यत: मद्दलम, इलाथलम और मंजीरे संगति करते हैं। शंख और चेंडा अन्य संगीत वाद्य यंत्र हैं।

प्रस्तुत पैकेज में आप थोड़ी सी ही पारंपरिक पुतलियों को देख पाएंगे। भारत में इस प्रकार की असंख्य पुतलियां हैं जो पौराणिक एवं दंत कताओं के पात्रों को दर्शाती हैं। इन विभिन्न श्रेणियों की पुतलियों की जानकारी देने के निमित्त चुनाव सीमित करना पड़ा।

The animal hide for the puppet is carefully selected and then treated to make it translucent; the process varies with each region. A sketch of the figure is made on the leather and cut out carefully. Perforations are made to show ornaments and other details which are finely crafted. Puppet making is a highly sophisticated art.

The shadow puppet theatre of Odisha and Kerala draws heavily upon themes from the Ramayana while those of Andhra Pradesh and Karnataka adapt episodes from the Mahabharata and local legends.

The shadow theatre of Karnataka is known as Togalu Gombeyatta. These puppets are mostly small in size. The puppets however differ in size according to their social status, for instance, large size for kings and religious characters and smaller size for common people or servants.

Tholu Bommalatta, Andhra Pradesh's shadow theatre has the richest and strongest tradition. The puppets are large in size and have jointed waist, shoulder, elbows and knees. They are coloured on both sides. Hence, these puppets throw coloured shadows on the screen. The music is dominantly influenced by the classical music of the region and the theme of the puppet plays are drawn from the Ramayana, Mahabharata and Puranas.

The most theatrically exciting is the Ravanachhaya of Odisha. The puppets are in one piece and have no joints. They are not coloured, hence throw opaque shadows on the screen. The manipulation requires great dexterity, since there are no joints. The puppets are made of deer skin and are conceived in bold dramatic poses. Apart from human and animal characters, many props such as trees, mountains, chariots, etc. are also used. Although, Ravanachhaya puppets are smaller in size—the largest are not more than two feet and have no jointed limbs, they create very sensitive and lyrical shadows.

The music is simple, but the literary text including the vocal accompaniment is very much influenced by the Odissi music. The theme of the puppet play is exclusively drawn from the Rama legend.

The traditional shadow puppet play of Kerala is called Tholpavakoothu. The theme of Tholpavakoothu is always the story of Ramayana. It is performed in a specially built playhouse called Koothumadam in the temple premises. The puppets of various characters are made of deer skin. The figures are drawn on skin, cut out and embellished with dots, lines, holes, and painted in different colours. A white screen is illuminated with the help of oil lamps and shadows of these figures are projected on the screen. The chief accompaniments for Tholpavakoothu are a *maddalam*, *ilathalam*, *ezhupara* and cymbals. Other musical instruments like the *shankha* and *chenda* are also played.

In this package, we shall see a few traditional puppets. India has a large variety of such puppets depicting various characters from legends and myths. Only a few have been selected keeping in mind representation of the various categories.

छात्रों एवं अध्यापकों के लिए गतिविधियां

प्रस्तुत 24 चित्रों को आप अपने स्कूल के किसी महत्वपूर्ण स्थान या कक्षा में प्रदर्शित कर सकते हैं। शीर्षक तथा विवरण सहित इन चित्रों को गत्ते पर लगाया जा सकता है। अध्यापकगण एक बार में कुछ एक चित्रों को लेकर छात्रों के मनोरंजन को ध्यान में रखकर उन्हें इन रचनात्मक गतिविधियों में शामिल कर सकते हैं।

संलग्न चित्रों के निरीक्षण, प्रशंसा तथा विचार-विमर्श करने में सुविधा हो इसके लिए विभिन्न प्रकार की पुतलियों के निर्माण एवं संचालन की आसान तकनीकें बताई जा रहीं हैं।

छात्रों को कोई विषय सुझाकर उन्हें कथा के वर्णन के लिए पुतलियां बनाने को कहें। प्रारंभिक तौर पर छात्र गत्ते की सरल दस्ताना पुतली या छाया पुतली बना सकते हैं। छात्रों को इस बात के लिए प्रेरित करें कि वे पात्र को आकार दें तथा दूसरों द्वारा लिखित संवादों को याद कर बोलने के स्थान पर स्वयं रचित संवाद बोलें।

छात्र बेकार पड़ी पुरानी गेंदों, जुराबों, लोहे, पत्तियां, कपड़ों, गत्ते के डिब्बों तथा कागज आदि से पुतलियां बना सकते हैं। वैसे किसी भी प्रकार की सामग्री इनके निर्माण में इस्तेमाल की जा सकती है।

अनुभवी छात्रों को डिज़ाइन एवं रंग के सौंदर्य को समझाया जा सकता है तथा उनमें भाषा के लावण्य के विकास के लिए अभ्यास करवाया जा सकता है।

विभिन्न आयु वर्गों के बच्चों द्वारा पुतली-निर्माण एवं उनके प्रदर्शन से उनकी प्रतिभा को पहचाना जा सकता है।

जब वे कोई विषय-वस्तु विकसित करें, उनकी भाषा की पकड़ मजबूत हो जाए तो पुतलियां बनाते हुए वे चित्रकला तथा मूर्तिकला की तकनीक सीख सकते हैं। पुतलियों के संचालन से उन्हें लय का पता चलेगा तथा संवादों को बोलने में उनके अंदर छिपे संगीत का भी।

Activities for Students and Teachers

These 24 pictures can be displayed in the classroom or at any prominent place in the school. The pictures may be stuck on cardboard with the title and description. The teacher can work with a few pictures at a time, ensuring students enjoyment in learning by involving them in creative activities.

In order to enhance the effect of studying, appreciating and discussing the pictures in this package, the simplest techniques of making and manipulating different types of puppets have also been presented.

Give a theme to the students and ask them to prepare puppets to enact a story. In the beginning, students can use simple finger or glove puppets and shadow puppets made of cardboard. The students should be encouraged to devise the character and use impromptu dialogues and avoid studying written scripts and learning dialogues prepared by others.

The students can make puppets from waste material such as old balls, socks, tins, leaves, rags, cardboard boxes, paper etc. Any material can be used to make a puppet.

Older students can be made to consciously understand the aesthetics in design and colour and conduct exercises to develop an understanding of the beauty in language.

Making puppets and putting up performances by children of any age-group help in discovering their hidden talents.

When they develop a theme—the story and the language skills are improved, while working with their hands to make the puppets they are involved in studying simple sculpture and painting techniques and while manipulating puppets, they acquire a sense of rhythm in movement and learn the musical content in the presentation of dialogues.

दस्ताना पुतली बनाने का तरीका
Construction of Glove Puppet

औज़ार
Tools

सबसे पहले रद्दी कागज को गेंद के आकार में स्टैण्ड पर बांधा जाता है।
Waste paper is tied around the stand in the shape of a ball.

गेंद पर कागज की लुगदी की पतली परत लगाई जाती है
A thin layer of papier mache is applied on the ball

गेंद पर कागज की लुगदी की सहायता से पुतली के मुंह का आकार दिया जाता है।
Shape of the face is carved in the papier mache.

सूखे हुए सिरे को दो भागों में काटा जाता है।
Dried head is cut into two parts.

रद्दी कागज निकालने के बाद पुतली का खोखला सिर

Hollow puppet head after removing waste paper from within.

दोनों भागों को फिर से गोंद की सहायता से जोड़ दिया जाता है।

Both parts are joined together with gum paste.

पुतली के सिर के साथ कपड़े का बना दस्ताना जोड़ा जाता है।

A glove made of cloth, attached to the puppet head.

पुतली को सफेद रंग देने के बाद सजाया जाता है।

Puppet head is decorated over the base of white

दस्ताना पुतली

Glove Puppet

दस्ताना पुतली चलाने का तरीका
Manipulation of Glove Puppet

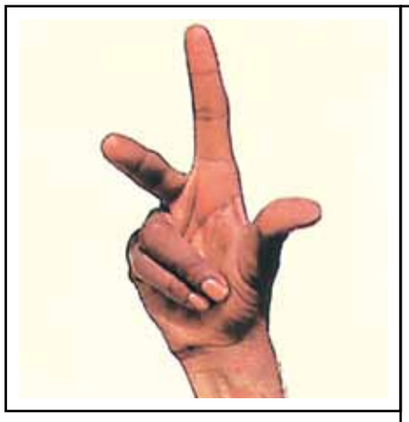

उंगलियों और पुतली की मूल अवस्था
Basic position

पुतली के सिर का संचालन
Manipulation of puppet's head

पुतली के हाथों का संचालन
Manipulation of hands

संपूर्ण पुतली का संचालन
Manipulation of the puppet

छाया पुतली बनाने का तरीका
Construction of Shadow Puppet

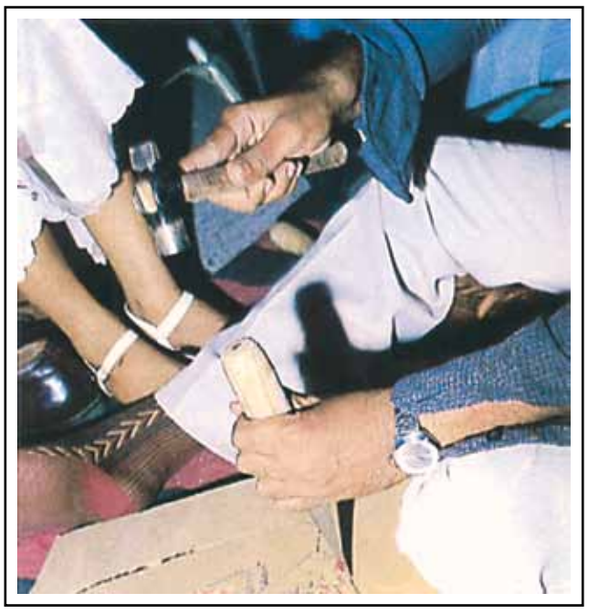

गत्ते पर आकृति बनाई जाती है।
The character is drawn on the cardboard.

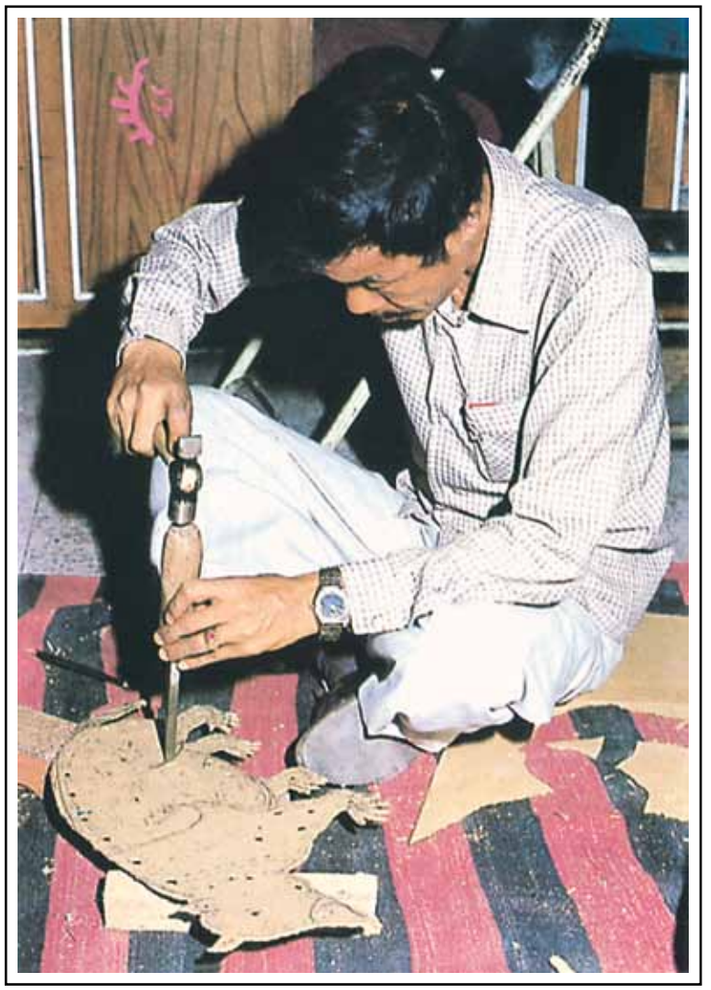

आवश्यकता अनुसार आकार देने के लिए गत्ते को काटा जाता है।
Cardboard is cut accordingly.

विभिन्न हिस्से
Different parts

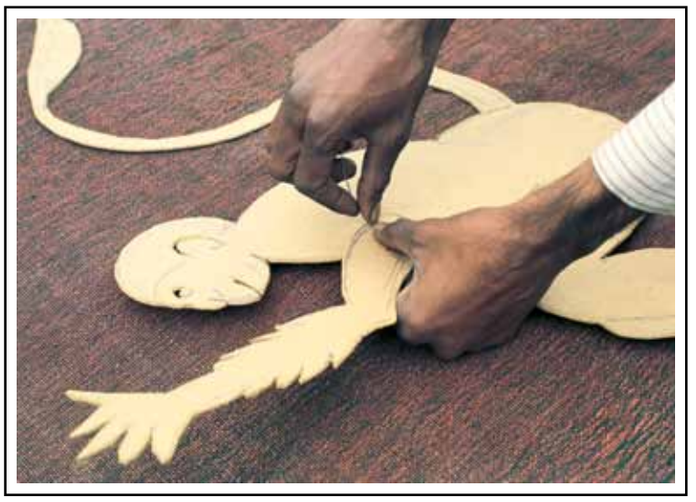

विभिन्न हिस्सों को तार अथवा धागे की सहायता से जोड़ा जाता है।
Different parts are joined together with wire or thread.

छाया पुतली
Shadow Puppet

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

1. दस्ताना पुतली, पावाकथकली, केरल

भारत में दस्ताना पुतलियों की परंपरा उत्तर प्रदेश, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल और केरल में प्रचलित है तथा ये धागा पुतली जितनी ही प्राचीन है। दस्ताना पुतलियों को बाजू, हाथ या हथेली पुतली के नाम से भी जाना जाता है और इन पुतलियों के सिर, पेपियर मेशे (कुट्टी), कपड़े या लकड़ी के बने होते है तथा हाथ ठीक गर्दन के नीचे से निकलते हुए बनाए जाते हैं। पुतली की शेष आकृति के रूप में लहराता घाघरा होता है।

प्रस्तुत चित्र में आप केरल की एक मूलभूत लकड़ी की बनी पुतली आकृति को देख सकते है। इसे पावाकथकली (पावा अर्थात् गुड़िया) के नाम से जाना जाता है। केरल के प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य नाटक, कथकली के प्रभाव स्वरूप 18वीं शताब्दी में पावाकथकली शैली प्रचार में आई।

1. Glove Puppet, Pavakathakali, Kerala

The tradition of glove puppets in India is popular in Uttar Pradesh, Odisha, West Bengal and Kerala and is as old as that of the string puppets. Glove puppets are also known as sleeve, hand or palm puppets and have their head made of either papier mache, cloth or wood with two hands emerging from just below the neck. The rest of the figure consists of a long flowing skirt.

In this picture, we can see the basic wooden puppet figure from Kerala known as Pavakathakali (Pava means a doll). Pavakathakali came into existence in the 18th century due to the influence of Kathakali, the famous classical dance drama of Kerala.

2. कृष्ण और दुर्योधन, पावाकथकली, केरल

पावाकथकली के लिए कथकली के ही समान विषय चुने जाते है। कथकली केरल का परंपरागत नृत्य नाटक है, जो भारतीय पौराणिक कथाओं तथा दंत कथाओं की कहानियों को नाट्य रूप में प्रस्तुत करता है। पुतलियों की पगड़ी और वेशभूषाएं कथकली कलाकारों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों के ही समान होती है। यहां तक कि संगीत, विषय-वस्तु, कहानियां और रंग प्रतीक प्रयोग भी कथकली नृत्य शैली के समान होती है। इस चित्र में भगवान कृष्ण को कौरव ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन के साथ दिखाया गया है। अच्छे पात्र के रूप में कृष्ण का चेहरा हरे रंग से चित्रित किया गया है, जबकि दुर्योधन के बुरे चरित्र की बुराई को प्रतीक रूप में प्रस्तुत करने हेतु उसका चेहरा काले रंग में दर्शाया गया है।

2. Krishna and Duryodhana, Pavakathakali, Kerala

The themes, chosen for Pavakathakali are the same as those of Kathakali, the traditional dance drama of Kerala which dramatises stories from Indian myths and legends. The head-dress and the costumes of the puppets are similar to those worn by Kathakali artists. Even the music, themes, stories and colour symbolism are similar to the Kathakali form.

In this picture, Lord Krishna is shown along with Duryodhana, the eldest of the Kaurava princes. While Krishna's face is painted in green, to show that he is a noble character. Duryodhana's face has been painted black which symbolises an evil being.

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

3. पांचाली, पावाकथकली, केरल

जन समूह का मनोरंजन करते समय पुतली नाट्य कला सौन्दर्यपरक तथा नैतिक जीवन मूल्यों को प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रस्तुत चित्र में, पांचाल देश के राजा ध्रुपद की पुत्री, पांचाली जो पांडवों की पत्नी थी, को देखा जा सकता है। पावाकथकली के स्त्री चरित्र भी कथकली के स्त्री चरित्रों से काफी नजदीकी रूप से समानता रखते हैं।

3. Panchali, Pavakathakali, Kerala

Puppet theatre plays a significant role in communicating aesthetic and moral values while providing entertainment to the masses. Panchali, the daughter of King Draupada of Panchala and the wife of the Pandavas is seen in the picture. Even the female characters of Pavakathakali have striking similarities to Kathakali female characters.

4. दुर्योधन, पावाकूथू (कथकली), केरल

कथकली के समान ही, पावाकूथू के पात्रों को भी अच्छे और बुरे चरित्रों में विभाजित किया गया है। महान या प्रभावशाली चरित्रों को हरे रंग से चित्रित किया जाता है और इन्हें पाच्चा कहा जाता है, जबकि बुरे चरित्रों को उनकी दाढ़ी के रंग तथा मूठ रूप में उनके चेहरों द्वारा पहचाना जाता है।

प्रस्तुत चित्र में कौरव ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन को देखा जा सकता है। उसकी नाक पर मूठ है और चेहरे पर काला रंग किया गया है जो बुरा चरित्र होने की पहचान है।

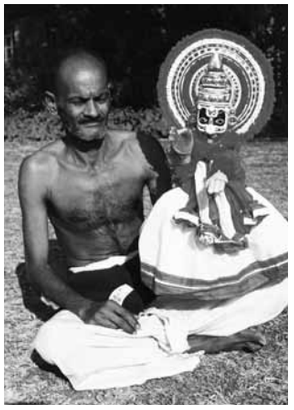

4. Duryodhana, Pavakoothu (Kathakali), Kerala

As in *Kathakali*, there is also a class demarcation between good and evil characters in Pavakoothu. The noble characters are painted green and are called *paccha* while the evil characters are identified by the knobs on their faces and the colour of their beard.

In this picture, you see Duryodhana, the eldest of the Kauravas and the king of Hastinapur. He has been shown with knob on his nose and black paint on his face which depicts that he is an evil character.

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

5. भीम, पावाकूथू (कथकली), केरल

भारत भर की परंपरागत पुतली नाट्यकला प्रचलित पौराणिक कथाओं और दंत कथाओं से ही मूलभूत रूप में अपनी विषय-वस्तु चुनती है। प्रस्तुत चित्र में, हम महाभारत के पांडव बंधुओं में सर्वाधिक शक्तिशाली और द्वितीय भाई भीम को देख सकते है। कहा जाता है कि वायु देवता की पूजा किए जाने पर कुंती को भीम की प्राप्ति हुई थी।

इस चित्र में, भीम का चेहरा हरे रंग से चित्रित है। कथकली के सभी अच्छे चरित्रो को हरे रंग से चित्रित किया जाता है।

5. Bhima, Pavakoothu (Kathakali), Kerala

Traditional puppet theatre all over India basically derives its themes from popular myths and legends. In this picture, we can see Bhima, the second and the strongest of the Pandava brothers of *Mahabharata*. It is said that Bhima was born to Kunti and Pandu by invoking *Vayu*, the god of wind.

Bhima's face is painted green. All noble characters in Kathakali are painted green.

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

6. राम, थोलपावाकूथू, केरल

थोलपावाकूथू केरल की परंपरागत छाया पुतली है। थोलपावाकूथू पुतली नाटक के विषय, मुख्यत: रामायण के प्रसंगों से लिए जाते है। इसकी पुतलियां हिरण की खाल से बनी होती है। खाल पर आकृतियों को रेखांकित करके काटा जाता है तथा उन्हें बिन्दुओं, रेखाओं, छिद्रों से सजाया जाता है और उन पर विभिन्न रंग किए जाते हैं। फिर, सफेद पर्दे पर तेल दीपों की सहायता से प्रदर्शित किया जाता है और इन आकृतियों की छाया, पर्दे पर प्रक्षेपित (फेंकी) की जाती है।

इस चित्र में, रामायण महाकाव्य के केन्द्रीय चरित्र-भगवान राम को देखा जा सकता है। राम को भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है और विश्व भर में हिन्दुओं द्वारा उनकी पूजा की जाती है।

6. Rama, Tholpavakoothu, Kerala

Tholpavakoothu is the traditional shadow puppet of Kerala. The themes of Tholpavakoothu are mainly taken from the episodes of the *Ramayana*. The puppets of Tholpavakoothu are made of deer skin. The figures are drawn on skin, cut out and embellished with dots, lines and holes and are painted in different colours. Then a white screen is illuminated with the help of oil lamps and shadows of these figures are projected on the screen.

In this picture, you see Lord Rama, the central character of the epic, '*Ramayana.'* Rama is regarded as an *Avatara* of Lord Vishnu and is worshipped by Hindus all over the world.

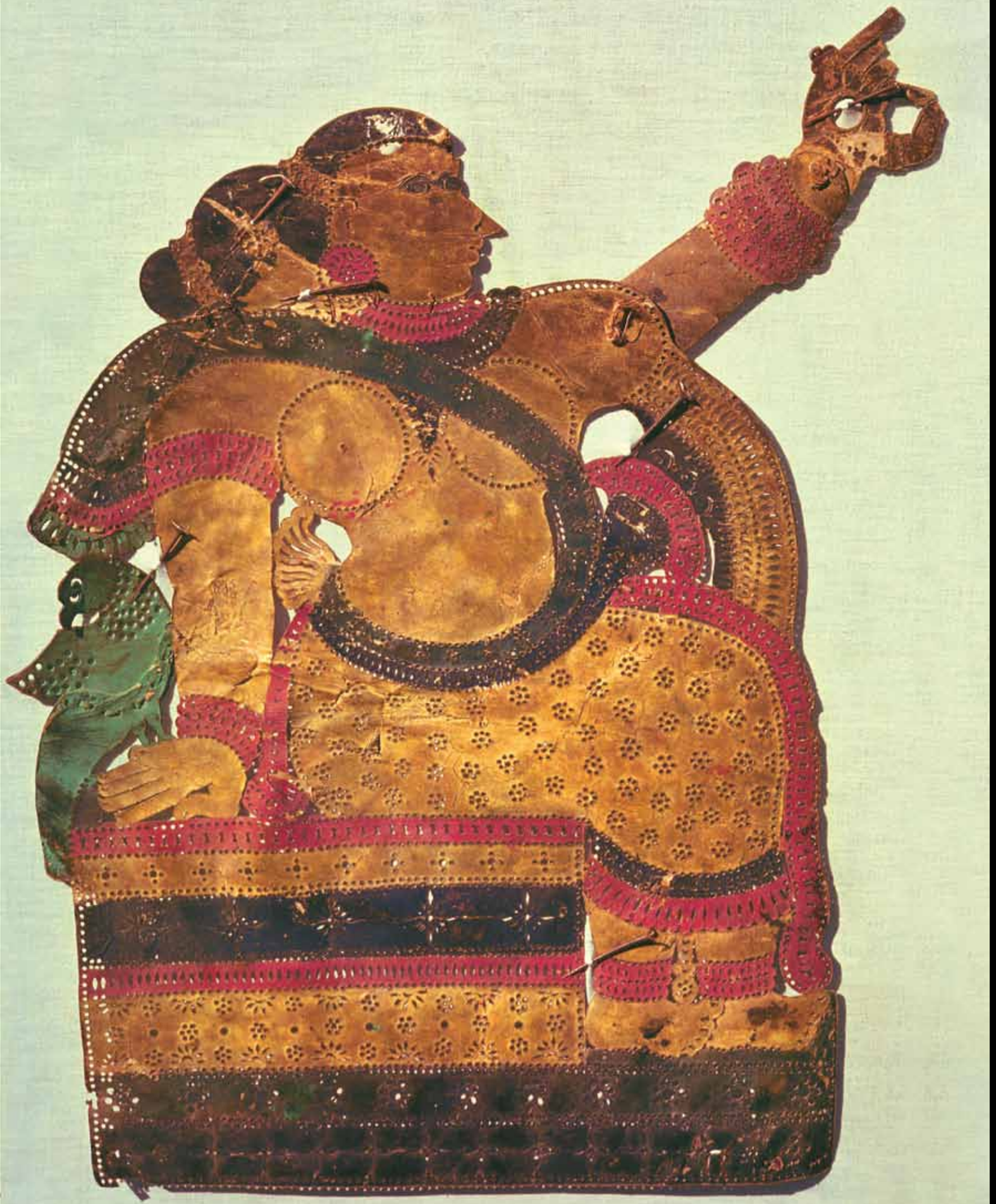

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

7. सीता, थोलपावावकूथू, केरल

इस चित्र में, प्रदर्शित पुतली, भगवान राम की पत्नी तथा मिथिला के राजा जनक की पुत्री सीता की है। सीता ने वन में जाने से पहले अपने पति के साथ अयोध्या में कई वर्ष बिताए थे। चमड़े पर किए गए छिद्र, पुतली की वेशभूषाओं तथा आभूषणों के विवरण को उभार कर प्रस्तुत करते है। इन पुतलियों के परिचालन के लिए कम प्रयास करना पड़ता है। पुतलियों को पर्दे पर लगाया जाता है और उनकी बाजूओं को घुमाया जाता है ताकि पता चल सके कि कौन सी पुतली चरित्र बोल रही है।

7. Sita, Tholpavakoothu, Kerala

The puppet shown in the picture is that of Sita, the daughter of Janaka, the king of Mithila and the wife of Lord Rama. Sita spent many years with her husband, Rama at Ayodhya before accompanying him to the forest during his period of exile. The perforations punched on the leather highlights the details of costumes and ornaments. The manipulation of these puppets require little effort. The puppets are pinned onto the screen, the arms are moved to indicate which character is speaking.

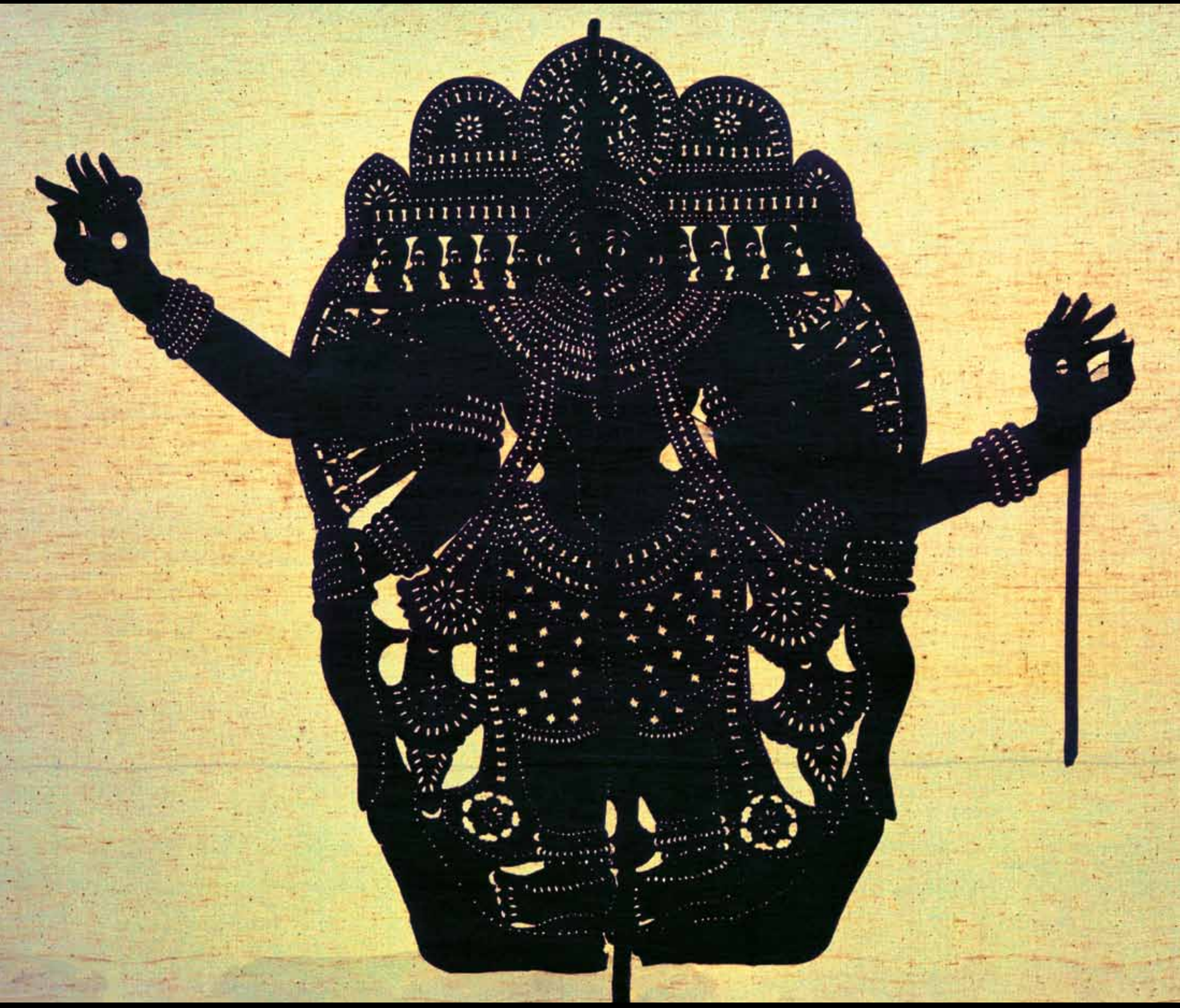

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

8. रावण, थोलपावाकूथू, केरल

प्रस्तुत चित्र में लंका के राजा रावण को प्रदर्शित किया गया है, जो रामायण का एक प्रमुख चरित्र है। रावण को राक्षसों का मुख्य माना जाता है और रामायण में उसे एक बुरे चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह माना जाता है कि रावण को भगवान ब्रह्मा द्वारा दिए गऐ वरदान के कारण बहुत सी दैवीय शक्तियां प्राप्त थीं। प्रस्तुत चित्र में रावण को उसके दस मस्तकों सहित प्रदर्शित किया गया है।

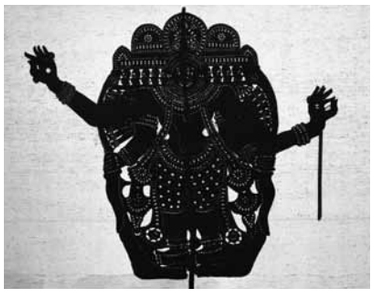

8. Ravana, Tholpavakoothu, Kerala

This picture shows Ravana, the king of Lanka and one of the main characters of the '*Ramayana'.* Ravana is regarded as the Lord of the *Rakshasas* and is portrayed as an evil character in the *Ramayana.* Ravana possessed mystical powers due to a boon granted to him after he had spent many years on meditation. Here, he is shown with his ten heads.

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

9. शिव, थोलपावाकूथू, केरल

प्रस्तुत चित्र में, भगवान शिव निदर्शित है। आकृति बहुत ही यथार्थ रूप में बनाई गई है। आभूषण तथा शास्त्रों जैसे सजावटी नमूनों को छिद्र करके ध्यानपूर्वक छैनी से काट कर वास्तविक रूप प्रदान करने की चेष्टा की गई है। यह पुतली की सूक्ष्म कला का एक नमूना है।

9. Shiva, Tholpavakoothu, Kerala

This picture shows Lord Shiva. The figure is very realistically made. Decorative motifs such as jewellery and weapons are perforated and carefully chiselled to make them look realistic. The puppet is a delicate work of art.

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

10. परिचालन, थोलपावकूथू, केरल

इस चित्र में हम थोलपावाकूथू छाया पुतलियों का पर्दे के पीछे से परिचालन देख सकते है। प्रदर्शित रावण और हनुमान के बीच युद्ध का दृश्य रामायण का एक प्रसंग से लिया गया है।

इन पुतलियों के परिचालन के लिए बहुत ही थोड़ा प्रयास करना पड़ता है। कौन सा चरित्र बोल रहा है, यह इंगित करने के लिए केवल हाथों को ही परिचालित किया जाता है। ओड़िशा की पुतलियों के विपरीत, इन पुतलियों की कोहनियों पर जोड़ होते है। इससे विविध प्रकार की गतियों को प्रस्तुत करने में काफी सुविधा होती है।

10. Manipulation, Tholpavakoothu, Kerala

In this picture, we can see the manipulation behind the screen of Kerala shadow puppets. The fight scene shown between Ravana and Hanuman is taken from an episode of the *Ramayana.*

The manipulation requires very little effort as only the hands are manipulated to indicate which character is speaking. Unlike, the Odisha puppets, these puppets have jointed areas at the elbows thus giving freedom for a variety of movements.

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

11. हनुमान, तोगलु गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

प्रस्तुत चित्र में प्रदर्शित हनुमान की पुतली आकृति को कर्नाटक के छाया पुतली नाटक तोगलु गोम्बेयेट्टा से लिया गया है। छाया पुतलियां सपाट आकृतियों की होती है तथा चमड़े को काट कर बनाई जाती है जिन्हें परिष्कृत कर पारभासी बनाया जाता है। पुतली के विवरण को चमड़े के एक ही टुकड़े पर ध्यानपूर्वक काटा जाता है। इस प्रकार पुतली निर्मित होती है। इस प्रक्रिया से पुतली के नाक-नक्श, वेशभूषा और आभूषण आदि उभर कर प्रकट होते हैं।

कर्नाटक की छाया पुतलियों की एक विशेषता यह है कि उनका आकार उनके सामाजिक महत्व के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है। राजाओं और धार्मिक चरित्रों को सामान्य व्यक्ति तथा सेवकों की तुलना में बड़े आकार में प्रस्तुत किया जाता है।

पवन पुत्र और भगवान राम के सर्वाधिक विश्वासपात्र सेवक हनुमान को हिन्दुओं द्वारा आदर प्राप्त है और उनकी पूजा की जाती है।

11. Hanuman, Togalu Gombeyatta, Karnataka

The Hanuman shown in this picture is taken from Togalu Gombeyatta, the shadow puppet theatre of Karnataka. Shadow puppets are flat figures, cut out of leather which has been treated and made translucent. The details are chiselled out carefully on the single piece of leather from which this puppet is made. This highlights the facial features, costumes and ornamentations.

The features of the shadow puppets of Karnataka is that their size differs according to their social status. Kings and religious characters are depicted as larger than the common people and servants.

Hanuman, the son of *Vayu* and the most trusted aid of Lord Rama is revered and worshipped by Hindus.

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

12. गणेश, तोगलु गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

पुतलियां बनाना, एक उच्च परिष्कृत कला है और गज देवता गणेश का यह रंगीन चित्र इसका एक अच्छा उदाहरण है। हिन्दू परंपरा के अनुसार, भगवान गणेश सभी विघ्नों को दूर करने वाले देवता हैं। पौराणिक कथाएं बताती हैं कि गणेश, भगवान शिव और पार्वती के पुत्र हैं ओर हिन्दू देवगणों के सर्वाधिक शक्तिशाली देवताओं में से एक है। इसलिए हिन्दू किसी भी मंगल कार्य को आरंभ करने से पूर्व भगवान गणेश की पूजा करके आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

12. Ganesh, Togalu Gombeyatta, Karnataka

Puppet making is a highly sophisticated art and this colourful picture of the elephant God Ganesh is a good example. According to Hindu traditions Lord Ganesh is the remover of all obstacles. Mythology tells us that he is the son of Lord Shiva and Parvati and is one of the most loved gods of the Hindu pantheon. Hindus, before undertaking any auspicious work evoke the blessing of Lord Ganesh by offering *poojas*.

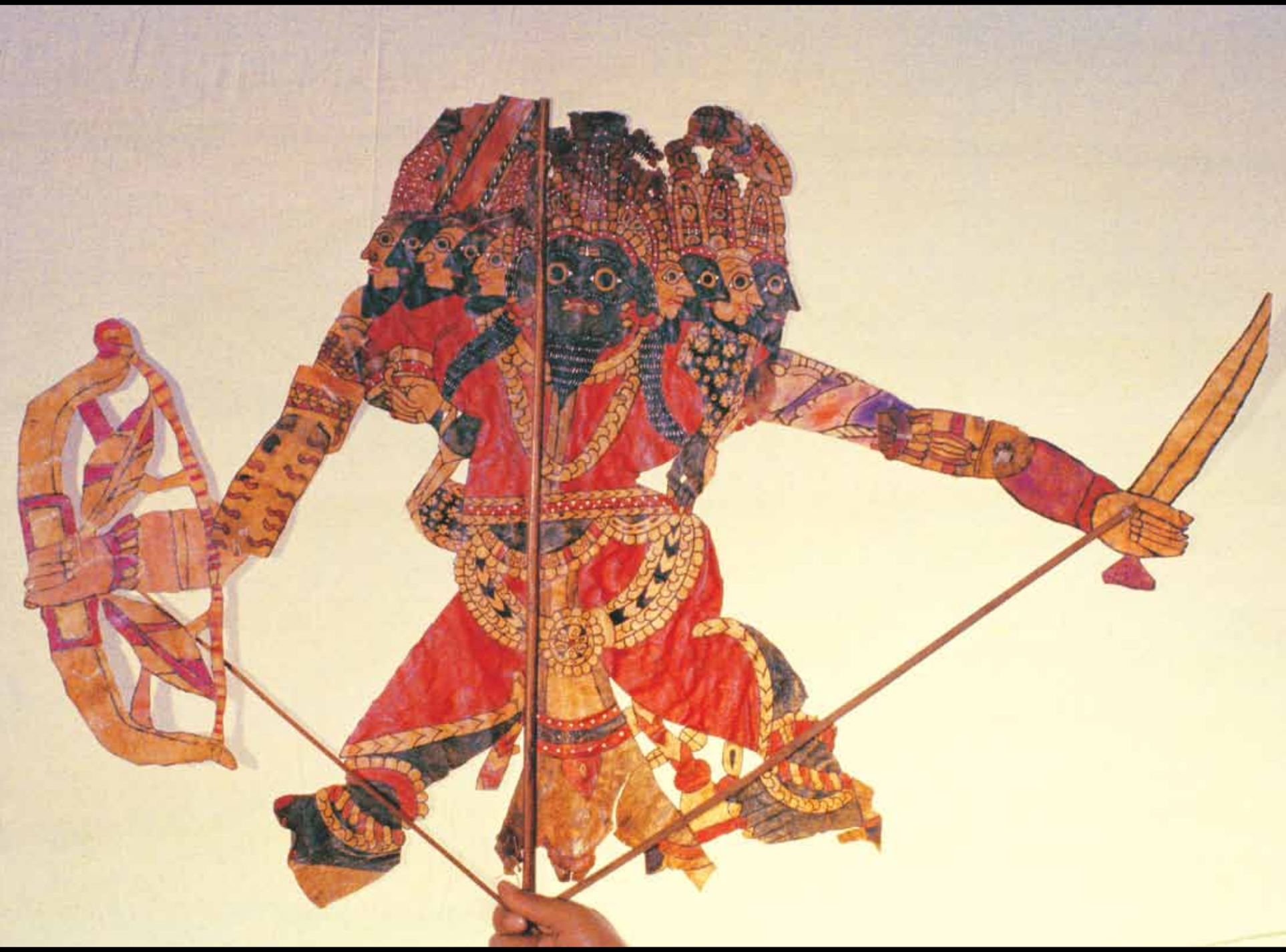

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

13. रावण, तोगलु गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

प्रस्तुत चित्र में असुर राजा रावण को पूर्ण युद्ध शास्त्रों के साथ देखा जा सकता है। रावण को सृष्टि के रचयिता-भगवान ब्रह्मा का वरदान प्राप्त होने के कारण दैवीय शक्तियां प्राप्त थीं। कहा जाता है कि रावण के दस सिर और बीस भुजाएं थीं, पर प्रस्तुत चित्र में रावण को दस सिर और दो भुजाओं सहित प्रदर्शित किया गया है। ऐसा अवश्य ही पुतलीकार की सुविधा के लिए किया गया होगा।

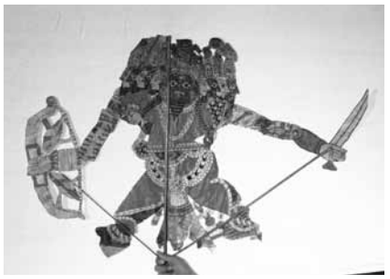

13. Ravana, Togalu Gombeyatta, Karnataka

This picture depicts the *Asura* King Ravana in full battle gear. Ravana possessed mystical powers due to a boon granted to him by Lord Brahma, the creator of the universe. Ravana is said to possess ten heads and twenty arms, but this picture depicts him with ten heads and only two arms. This must have been done for the convenience of the puppeteer for easy manipulation.

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

14. रावण और सीता, तोगलु गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

कर्नाटक के तोगलु गोम्बेयेट्टा की इस छाया पुतली प्रस्तुति में असुर राजा रावण को अपने रथ पर सीता का हरण करके लंका ले जाते हुए दिखाया गया है। रावण एक तपस्वी के वेश में पंचवटी आया और उसने सीता का हरण करने से पहले उसे अपना सही रूप दिखाया। यहां, रावण के मुंह से दांत बाहर निकले हुए हैं तथा उसे एक बुरे चरित्र के रूप में निदर्शित किया गया है। देखिए किस प्रकार रावण के वस्त्र, आभूषण और बालों की विशिष्टता प्रकट करने हेतु रंगों का उपयोग किया गया है।

14. Ravana and Sita, Togalu Gombeyatta, Karnataka

This shadow puppet from Togalu Gombeyatta of Karnataka shows the *Asura* king Ravana abducting Sita and taking her to Lanka in his chariot. Ravana came to *Panchavati* disguised as an ascetic and showed his true identity before abducting Sita and carrying her to his chariot. Here, Ravana is depicted as an evil character with his teeth sticking out of his mouth. Notice the clothing, ornaments and hair are painted to make them look prominent.

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

15. राम, विभीषण, हनुमान, तोलु बोम्मालट्टा, आन्ध्र प्रदेश

आन्ध्र प्रदेश के छाया पुतली नाटक को तोलु बोम्मालट्टा कहा जाता है। ये पुतलियां आकार में बड़ी होती हैं तथा इनकी कोहनियों, घुटनों, कमर तथा कंधों में जोड़ होते हैं। ये पुतलियां दोनों ओर से रंगीन होती हैं। इसी वजह से ये पर्दे पर रंगीन छाया प्रक्षेपित करती हैं। प्रस्तुत चित्र में, विभीषण के राज तिलक समारोह में, रावण के भाई विभीषण को सपत्नीक, राम तथा हनुमान के साथ देखा जा सकता है। विभीषण को लंका में हुई लड़ाई में राम द्वारा रावण को मार देने के पश्चात् लंका का राजा बनाया गया था।

15. Rama, Vibhishana and Hanuman, Tholu Bommalatta, Andhra Pradesh

Tholu Bommalatta is the shadow puppet theatre of Andhra Pradesh. The puppets are large in size and have jointed waist, shoulders, elbows and knees. They are coloured on both sides, hence, these puppets throw coloured shadows on the screen.

The picture shows Ravana's brother Vibhishana and his wife along with Rama and Hanuman during the coronation ceremony of Vibhishana after Lord Rama had killed Ravana in the battle of Lanka.

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

16. सीता और लक्ष्मण, तोलु बोम्मालट्टा, आन्ध्र प्रदेश

इस चित्र में, पंचवटी में, सीता और लक्ष्मण को देखा जा सकता है। रामायण के अनुसार पंचवटी से राम और लक्ष्मण को हटाने के लिए रावण ने मारीच को एक सुंदर हिरण के रूप में भेजा। काफी पीछा करने के पश्चात्, राम हिरण को मार देते हैं, जो मरते हुए राम की आवाज में लक्ष्मण का नाम लेकर चीखता है। सीता चीख सुन कर लक्ष्मण से राम को ढूंढ कर लाने का निवेदन करती है। अनिच्छुक लक्ष्मण जाने से पहले कुटिया के बाहर एक रेखा खींचता है और सीता को उस रेखा के पार जाने से मना करता है। इस रेखा को 'लक्ष्मण रेखा' के नाम से जाना जाता है।

16. Sita and Lakshmana, Tholu Bommalatta, Andhra Pradesh

In this picture, we see Lakshmana and Sita at *Panchavati.* Ravana sends Maricha disguised as a beautiful deer to lure out Rama from *Panchavati.* After a long chase. Rama kills the deer, who yells out the name of Lakshmana in the voice of Rama. Sita hearing the cry pleads with Lakshmana to go in search of Rama. A reluctant Lakshmana before leaving draws a line, forbidding Sita to cross it. This line is known as the *"Lakshmana Rekha.'*

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

17. रावण, सीता तथा हनुमान, तोलु बोम्मालट्टा, आंध्र प्रदेश

प्रस्तुत चित्र में दर्शाया गया दृश्य रामायण का एक अंश है। रावण ने सीता का अपहरण करने के पश्चात् उसे अपने महल के अशोक वन में रखा था।

चित्र में रावण सीताजी से कह रहा है कि वह उससे विवाह कर ले। भगवान राम का दूत बन कर आए हनुमानजी को वृक्ष के पत्तों में छिप कर रावण-सीता संवाद को सुनते दिखाया गया है।

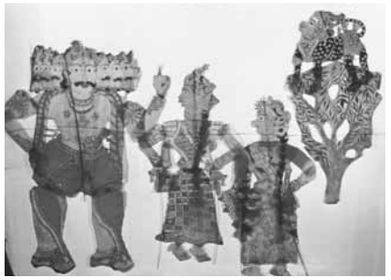

17. Ravana, Sita and Hanuman, Tholu Bommalatta, Andhra Pradesh

The scene depicted in this picture is taken from an episode of the *Ramayana.* Ravana after abducting Sita, housed her in his palace garden named *Ashokavan.*

This picture shows Ravana at *Ashokavan* asking Sita to marry him. Hanuman who had come to Lanka as Lord Rama's emissary at that time is seen hiding in the branches of the Ashoka tree listening to the conversation.

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

18. परिचालन, तोलु बोम्मालट्टा, आंध्र प्रदेश

तोलु बोम्मालट्टा की छाया पुतली नाटक की कला सबसे प्राचीन होने के साथ-साथ समृद्ध भी है। इसकी पुतलियां आकार में बड़ी होने के अलावा कमर, कंधों, कोहनियों और घुटनों से संधियुक्त होती हैं। इस कारण परिचालक को खड़े हो कर इन का परिचालन करना पड़ता है। ये पुतलियां चूंकि रंगीन होती है। इस कारण पर्दे पर ये रंगीन छाया फेंकती है।

18. Manipulation, Tholu Bommalatta, Andhra Pradesh

Tholu Bommalatta, the shadow puppet theatre has the richest and strongest tradition since the puppets are larger in size and have jointed waist, shoulders, elbows and knees, the puppeteers have to stand in order to manipulate these puppets. These puppets are colourfully painted thus throwing coloured shadows on the screen.

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

19. राम, सीता और लक्ष्मण, रावणछाया, ओड़िशा

ओड़िशा की छाया पुतली भारत की अत्यधिक रोमांचकारी नाटकीय छाया पुतली कलाओं में से एक है। वहां के छाया पुतली नाटक को रावणछाया कहते हैं। ये पुतलियां मृग-छाला की बनी होती हैं तथा इनका आकार अन्य छाया पुतलियों से काफी छोटा होता है। ये मोटी होने के साथ-साथ अपारदर्शी भी होती हैं इसी कारण पर्दे पर इनकी छाया श्वेत-श्याम पड़ती है।

प्रस्तुत चित्र में रावणछाया पुतलियां जो दृश्य प्रस्तुत कर रही हैं उसमें खेवट नाव में राम, लक्ष्मण और सीता को नदी पार करा रहा है।

19. Rama, Sita and Lakshmana, Ravanachhaya, Odisha

One of the most theatrically exciting forms of shadow puppetry in India is that of Odisha. The shadow puppet theatre of Odisha is called *Ravanachhaya.* The puppets are made of deer skin and are smaller in size than other shadow puppets. They are thick and opaque and throw black and white shadows.

This picture shows the Ravanachhaya puppets performing a scene from the Ramayana showing Khevat sailing the boat carrying Rama, Lakshmana and Sita to get the river crossed.

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

20. रावण और सीता, रावणछाया, ओड़िशा

प्रस्तुत चित्र में असुर राजा रावण को उसके दस सिर तथा बीस भुजाओं सहित वास्तविक रूप में देखा जा सकता है, जो पंचवटी से सीता का हरण करने के लिए तैयार है। मारीच ने जब हिरण का रूप धारण कर पंचवटी से राम को हटा दिया तब रावण तपस्वी के वेश में पंचवटी आया। लक्ष्मण ने कुटिया में सीता को छोड़ कर जाने से पहले उसकी सुरक्षा के लिए कुटिया के बाहर एक रेखा- 'लक्ष्मण रेखा' खींची थीं और उसे रेखा पार करने के लिए मना किया था। पर सीता ने जब तपस्वी को देखा तो वह उसे भिक्षा देने के लिए रेखा पार कर बाहर आई और इस प्रकार रावण के जाल में फंस गई।

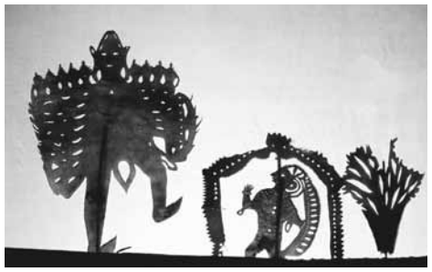

20. Ravana and Sita, Ravanachhaya, Odisha

This picture shows the *Asura* King Ravana in his real form with his ten heads and twenty arms, all set to abduct Sita from *Panchavati.* Ravana had come to *Panchavati* disguised as an ascetic after Maricha had assumed the form of a deer and lured away Rama from *Panchavati.* Lakshmana before leaving Sita had drawn a line. *'Lakshmana Rekha'* for her protection, forbidding her to cross it. However, seeing an ascetic, Sita crossed the line to offer him food, thus falling into the trap laid by Ravana.

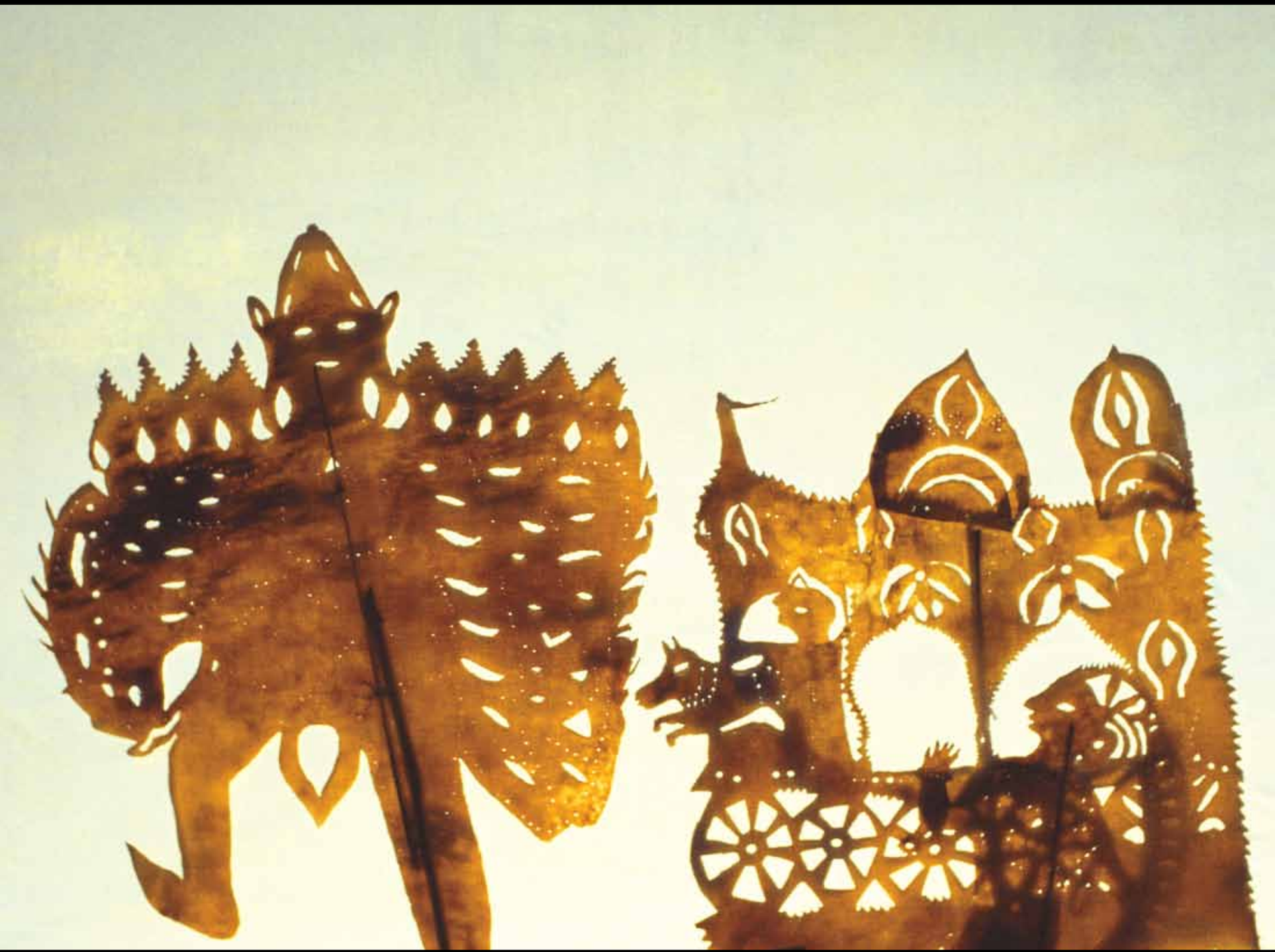

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

21. रावण और सीता, रावणछाया, ओड़िशा

रावण सीता का हरण करने के बाद उसे अपने रथ पर बैठा कर लंका की ओर ले गया। शोकातुर सीता ने मार्ग के वृक्षों और नदियों से प्रार्थना की और राम को उसकी इस दशा की सूचना देने के लिए कहा। सीता के रूदन ने एक विशाल पक्षी-जटायु का ध्यान आकर्षित किया, जिसने सीता को बचाने की कोशिश करते हुए रावण पर हमला किया। कड़े संघर्ष के बाद रावण जटायु के पंख काटने में सफल हो गया।

प्रस्तुत चित्र में जटायु के साथ हुए संघर्ष के बाद रावण को फिर से लंका जाने के लिए अपने रथ पर वापस आते हुए दिखाया गया है।

21. Ravana and Sita, Ravanachhaya, Odisha

After Ravana had abducted Sita, he carried her in his chariot towards Lanka. A heartbroken Sita invoked the trees and the rivers to tell Rama of her plight. Her desperate cries caught the attention of Jatayu, a huge bird who came to her rescue and attacked Ravana. After a tough fight, Ravana succeeded in cutting Jatayu's wings. This picture shows Ravana coming back to his chariot after the fight to resume his onward journey to Lanka.

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

22. बाली और सुग्रीव, रावणछाया, ओड़िशा

रावणछाया पुतली शैली के इस चित्र में दो वानर राजाओं, बाली तथा सुग्रीव को, एक-दूसरे के साथ लड़ते हुए दिखाया गया है। रामायण के अनुसार बाली और सुग्रीव दोनों मायावी नामक एक राक्षस से लड़ने गए थे। जब मायावी एक गुफा में लुप्त हो गया तब बाली ने उसका वहां पीछा किया और सुग्रीव बाहर इंतजार करता रहा। एक वर्ष के लंबे इंतजार के बाद सुग्रीव यह मान कर वापस आ गया कि बाली को राक्षस ने मार दिया है और तब से सुग्रीव ने राज्य पर शासन करना आरंभ कर दिया। पर बाली मायावी राक्षस को मारने के पश्चात् वापस आ गया और उसने सुग्रीव को राज्य हड़पने के लिए दोषारोपित किया।

22. Bali and Sugriva, Ravanachhaya, Odisha

This picture from Ravanachhaya shows the two monkey kings. Bali and Sugriva fighting each other. According to *Ramayana,* both Bali and Sugriva had gone to fight a demon called Mayavi. While Mayavi disappeared into a cave, Bali followed him there and Sugriva waited outside. After a year long wait, Sugriva returned presuming that Bali was killed by the demon and started ruling his kingdom. But Bali came back after killing Mayavi and accused Sugriva of usurping his kingdom.

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

23. हनुमान, रावणछाया, ओड़िशा

प्रस्तुत चित्र में वानर देवता हनुमान को उनकी 'गदा' के साथ देखा जा सकता है। हनुमान को वायु का पुत्र माना जाता है और उन्हें शक्ति तथा भक्ति का प्रतीक कहा जाता है। रामायण का एक प्रसंग हनुमान की शक्ति के विषय में हमें बताता है कि जब लड़ाई में लक्ष्मण घायल हो गए, तब हनुमान को कुछ औषधीय जड़ी-बूटियां लाने के लिए हिमालय पर भेजा गया था। हनुमान जब उस जड़ी-बूटी को पहचान नहीं सके तो वे पूरा पर्वत उठा कर युद्ध भूमि में ले आए, जिसमें से जड़ी-बूटी देने पर लक्ष्मण को होश आया।

23. Hanuman, Ravanachhaya, Odisha

This picture shows the monkey God Hanuman with his Mace or *'Gadda'*. Hanuman is regarded as the son of *Vayu* and is considered as an epitome of strength and devotion. An episode in *Ramayana* tells us of his prowess. When Lakshmana was injured in the battle, Hanuman was sent to the Himalayas to fetch some medicinal herbs. Unable to recognise them, Hanuman uprooted the whole mountain and brought it to the battle field which helped in reviving Lakshmana.

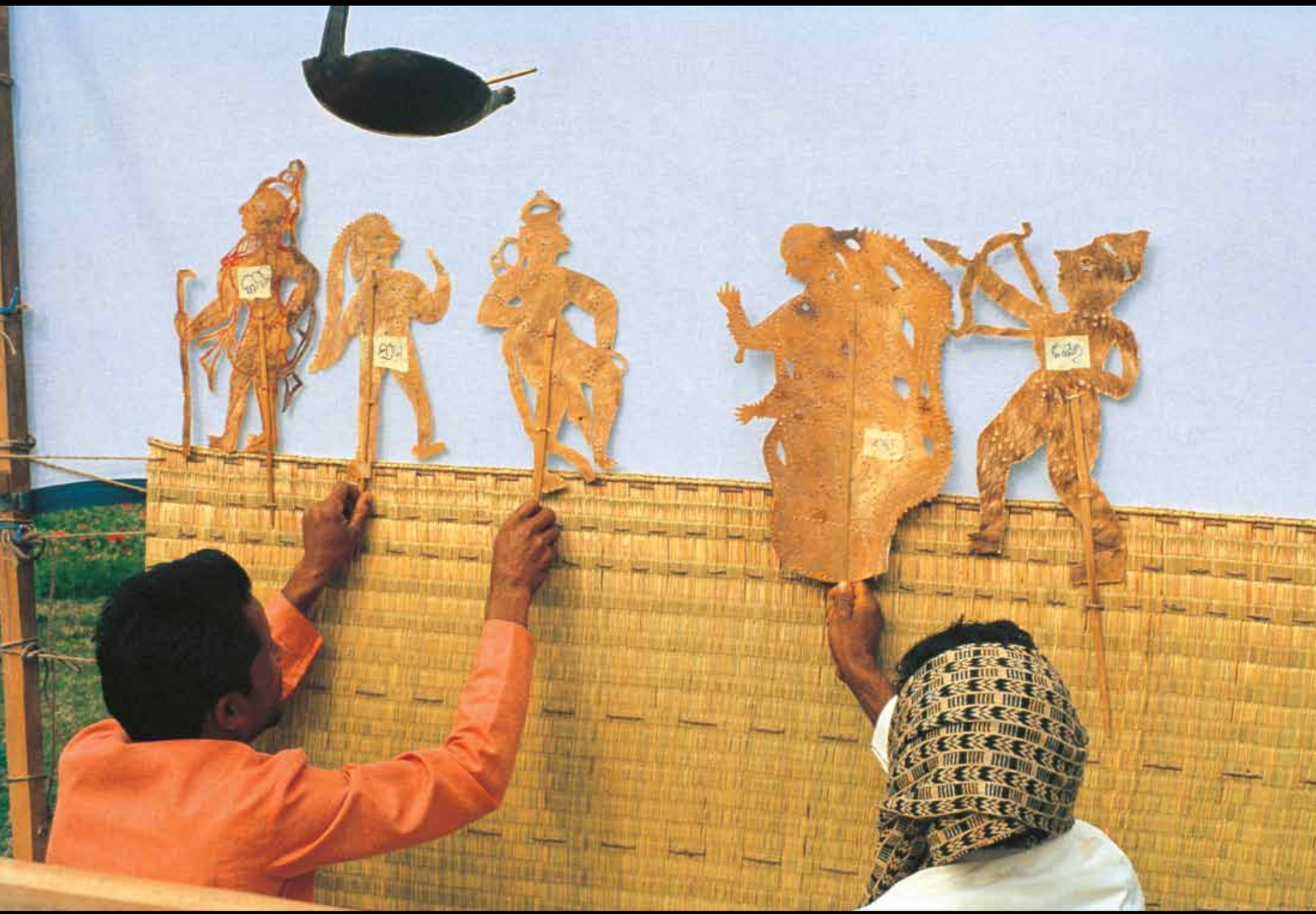

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

24. परिचालन, रावणछाया, ओड़िशा

प्रस्तुत चित्र में रावणछाया पुतली का मंच के पीछे से परिचालन करते हुए दिखाया गया है। कार्यक्रम प्रस्तुतकर्ता पर्दे के पीछे जमीन पर पालथी मार कर बैठते हैं और अपने दोनों हाथों की तेज गति से पुतलियों को परिचालित करते हैं। चूंकि ये पुतलियां एक ही टुकड़े से बनी होती हैं और इनमें कोई जोड़ नहीं होता इसलिए इन्हें परिचालित करने की तकनीक अन्य छाया पुतलियों की तुलना में भिन्न होती है।

24. Manipulation, Ravanachhaya, Odisha

In this picture, back stage manipulation of Ravanachhaya puppet is shown. The performers squat on the ground behind the screen and manipulate the puppets using both hands and fast movements. As the puppets are in one piece and have no joints, the technique of manipulation is different from other shadow puppets.

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

1. दस्ताना पुतली, पावाकथकली, केरल

भारत में दस्ताना पुतलियों की परंपरा उत्तर प्रदेश, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल और केरल में प्रचलित है तथा ये धागा पुतली जितनी ही प्राचीन है। दस्ताना पुतलियों को बाजू, हाथ या हथेली पुतली के नाम से भी जाना जाता है और इन पुतलियों के सिर, पेपियर मेशे (कुट्टी), कपड़े या लकड़ी के बने होते है तथा हाथ ठीक गर्दन के नीचे से निकलते हुए बनाए जाते हैं। पुतली की शेष आकृति के रूप में लहराता घाघरा होता है।

प्रस्तुत चित्र में आप केरल की एक मूलभूत लकड़ी की बनी पुतली आकृति को देख सकते है। इसे पावाकथकली (पावा अर्थात् गुड़िया) के नाम से जाना जाता है। केरल के प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य नाटक, कथकली के प्रभाव स्वरूप 18वीं शताब्दी में पावाकथकली शैली प्रचार में आई।

2. कृष्ण और दुर्योधन, पावाकथकली, केरल

पावाकथकली के लिए कथकली के ही समान विषय चुने जाते है। कथकली केरल का परंपरागत नृत्य नाटक है, जो भारतीय पौराणिक कथाओं तथा दंत कथाओं की कहानियों को नाट्य रूप में प्रस्तुत करता है। पुतलियों की पगड़ी और वेशभूषाएं कथकली कलाकारों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों के ही समान होती है। यहां तक कि संगीत, विषय-वस्तु, कहानियां और रंग प्रतीक प्रयोग भी कथकली नृत्य शैली के समान होती है। इस चित्र में भगवान कृष्ण को कौरव ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन के साथ दिखाया गया है। अच्छे पात्र के रूप में कृष्ण का चेहरा हरे रंग से चित्रित किया गया है, जबकि दुर्योधन के बुरे चरित्र की बुराई को प्रतीक रूप में प्रस्तुत करने हेतु उसका चेहरा काले रंग में दर्शाया गया है।

3. पांचाली, पावाकथकली, केरल

जन समूह का मनोरंजन करते समय पुतली नाट्य कला सौन्दर्यपरक तथा नैतिक जीवन मूल्यों को प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रस्तुत चित्र में, पांचाल देश के राजा ध्रुपद की पुत्री, पांचाली जो पांडवों की पत्नी थी, को देखा जा सकता है। पावाकथकली के स्त्री चरित्र भी कथकली के स्त्री चरित्रों से काफी नजदीकी रूप से समानता रखते हैं।

4. दुर्योधन, पावाकूथू (कथकली), केरल

कथकली के समान ही, पावाकूथू के पात्रों को भी अच्छे और बुरे चरित्रों में विभाजित किया गया है। महान या प्रभावशाली चरित्रों को हरे रंग से चित्रित किया जाता है और इन्हें पाच्चा कहा जाता है, जबकि बुरे चरित्रों को उनकी दाढ़ी के रंग तथा मूठ रूप में उनके चेहरों द्वारा पहचाना जाता है।

प्रस्तुत चित्र में कौरव ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन को देखा जा सकता है। उसकी नाक पर मूठ है और चेहरे पर काला रंग किया गया है जो बुरा चरित्र होने की पहचान है।

5. भीम, पावाकूथू (कथकली), केरल

भारत भर की परंपरागत पुतली नाट्यकला प्रचलित पौराणिक कथाओं और दंत कथाओं से ही मूलभूत रूप में अपनी विषय-वस्तु चुनती है। प्रस्तुत चित्र में, हम महाभारत के पांडव बंधुओं में सर्वाधिक शक्तिशाली और द्वितीय भाई भीम को देख सकते है। कहा जाता है कि वायु देवता की पूजा किए जाने पर कुंती को भीम की प्राप्ति हुई थी।

इस चित्र में, भीम का चेहरा हरे रंग से चित्रित है। कथकली के सभी अच्छे चरित्रो को हरे रंग से चित्रित किया जाता है।

6. राम, थोलपावाकूथू, केरल

थोलपावाकूथू केरल की परंपरागत छाया पुतली है। थोलपावाकूथू पुतली नाटक के विषय, मुख्यत: रामायण के प्रसंगों से लिए जाते है। इसकी पुतलियां हिरण की खाल से बनी होती है। खाल पर आकृतियों को रेखांकित करके काटा जाता है तथा उन्हें बिन्दुओं, रेखाओं, छिद्रों से सजाया जाता है और उन पर विभिन्न रंग किए जाते हैं। फिर, सफेद पर्दे पर तेल दीपों की सहायता से प्रदर्शित किया जाता है और इन आकृतियों की छाया, पर्दे पर प्रक्षेपित (फेंकी) की जाती है।

इस चित्र में, रामायण महाकाव्य के केन्द्रीय चरित्र-भगवान राम को देखा जा सकता है। राम को भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है और विश्व भर में हिन्दुओं द्वारा उनकी पूजा की जाती है।

7. सीता, थोलपावावकूथू, केरल

इस चित्र में, प्रदर्शित पुतली, भगवान राम की पत्नी तथा मिथिला के राजा जनक की पुत्री सीता की है। सीता ने वन में जाने से पहले अपने पति के साथ अयोध्या में कई वर्ष बिताए थे। चमड़े पर किए गए छिद्र, पुतली की वेशभूषाओं तथा आभूषणों के विवरण को उभार कर प्रस्तुत करते है। इन पुतलियों के परिचालन के लिए कम प्रयास करना पड़ता है। पुतलियों को पर्दे पर लगाया जाता है और उनकी बाजूओं को घुमाया जाता है ताकि पता चल सके कि कौन सी पुतली चरित्र बोल रही है।

8. रावण, थोलपावाकूथू, केरल

प्रस्तुत चित्र में लंका के राजा रावण को प्रदर्शित किया गया है, जो रामायण का एक प्रमुख चरित्र है। रावण को राक्षसों का मुख्य माना जाता है और रामायण में उसे एक बुरे चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह माना जाता है कि रावण को भगवान ब्रह्मा द्वारा दिए गऐ वरदान के कारण बहुत सी दैवीय शक्तियां प्राप्त थीं। प्रस्तुत चित्र में रावण को उसके दस मस्तकों सहित प्रदर्शित किया गया है।

9. शिव, थोलपावाकूथू, केरल

प्रस्तुत चित्र में, भगवान शिव निदर्शित है। आकृति बहुत ही यथार्थ रूप में बनाई गई है। आभूषण तथा शास्त्रों जैसे सजावटी नमूनों को छिद्र करके ध्यानपूर्वक छैनी से काट कर वास्तविक रूप प्रदान करने की चेष्टा की गई है। यह पुतली की सूक्ष्म कला का एक नमूना है।

10. परिचालन, थोलपावकूथू, केरल

इस चित्र में हम थोलपावाकूथू छाया पुतलियों का पर्दे के पीछे से परिचालन देख सकते है। प्रदर्शित रावण और हनुमान के बीच युद्ध का दृश्य रामायण का एक प्रसंग से लिया गया है।

इन पुतलियों के परिचालन के लिए बहुत ही थोड़ा प्रयास करना पड़ता है। कौन सा चरित्र बोल रहा है, यह इंगित करने के लिए केवल हाथों को ही परिचालित किया जाता है। ओड़िशा की पुतलियों के विपरीत, इन पुतलियों की कोहनियों पर जोड़ होते है। इससे विविध प्रकार की गतियों को प्रस्तुत करने में काफी सुविधा होती है।

11. हनुमान, तोगलु गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

प्रस्तुत चित्र में प्रदर्शित हनुमान की पुतली आकृति को कर्नाटक के छाया पुतली नाटक तोगलु गोम्बेयेट्टा से लिया गया है। छाया पुतलियां सपाट आकृतियों की होती है तथा चमड़े को काट कर बनाई जाती है जिन्हें परिष्कृत कर पारभासी बनाया जाता है। पुतली के विवरण को चमड़े के एक ही टुकड़े पर ध्यानपूर्वक काटा जाता हैं। इस प्रकार पुतली निर्मित होती है। इस प्रक्रिया से पुतली के नाक-नक्श, वेशभूषा और आभूषण आदि उभर कर प्रकट होते हैं।

कर्नाटक की छाया पुतलियों की एक विशेषता यह है कि उनका आकार उनके सामाजिक महत्व के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है। राजाओं और धार्मिक चरित्रों को सामान्य व्यक्ति तथा सेवकों की तुलना में बड़े आकार में प्रस्तुत किया जाता है।
पवन पुत्र और भगवान राम के सर्वाधिक विश्वासपात्र सेवक हनुमान को हिन्दुओं द्वारा आदर प्राप्त है और उनकी पूजा की जाती है।

12. गणेश, तोगलु गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

पुतलियां बनाना, एक उच्च परिष्कृत कला है और गज देवता गणेश का यह रंगीन चित्र इसका एक अच्छा उदाहरण है। हिन्दू परंपरा के अनुसार, भगवान गणेश सभी विघ्नों को दूर करने वाले देवता हैं। पौराणिक कथाएं बताती हैं कि गणेश, भगवान शिव और पार्वती के पुत्र हैं ओर हिन्दू देवगणों के सर्वाधिक शक्तिशाली देवताओं में से एक है। इसलिए हिन्दू किसी भी मंगल कार्य को आरंभ करने से पूर्व भगवान गणेश की पूजा करके आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

13. रावण, तोगलु गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

प्रस्तुत चित्र में असुर राजा रावण को पूर्ण युद्ध शास्त्रों के साथ देखा जा सकता है। रावण को सृष्टि के रचयिता-भगवान ब्रह्मा का वरदान प्राप्त होने के कारण दैवीय शक्तियां प्राप्त थीं। कहा जाता है कि रावण के दस सिर और बीस भुजाएं थीं, पर प्रस्तुत चित्र में रावण को दस सिर और दो भुजाओं सहित प्रदर्शित किया गया है। ऐसा अवश्य ही पुतलीकार की सुविधा के लिए किया गया होगा।

14. रावण और सीता, तोगलु गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

कर्नाटक के तोगलु गोम्बेयेट्टा की इस छाया पुतली प्रस्तुति में असुर राजा रावण को अपने रथ पर सीता का हरण करके लंका ले जाते हुए दिखाया गया है। रावण एक तपस्वी के वेश में पंचवटी आया और उसने सीता का हरण करने से पहले उसे अपना सही रूप दिखाया। यहां, रावण के मुंह से दांत बाहर निकले हुए हैं तथा उसे एक बुरे चरित्र के रूप में निदर्शित किया गया है। देखिए किस प्रकार रावण के वस्त्र, आभूषण और बालों की विशिष्टता प्रकट करने हेतु रंगों का उपयोग किया गया है।

15. राम, विभीषण, हनुमान, तोलु बोम्मालट्टा, आन्ध्र प्रदेश

आन्ध्र प्रदेश के छाया पुतली नाटक को तोलु बोम्मालट्टा कहा जाता है। ये पुतलियां आकार में बड़ी होती हैं तथा इनकी कोहनियों, घुटनों, कमर तथा कंधों में जोड़ होते हैं। ये पुतलियां दोनों ओर से रंगीन होती हैं। इसी वजह से ये पर्दे पर रंगीन छाया प्रक्षेपित करती हैं। प्रस्तुत चित्र में, विभीषण के राज तिलक समारोह में, रावण के भाई विभीषण को सपत्नी, राम तथा हनुमान के साथ देखा जा सकता है। विभीषण को लंका में हुई लड़ाई में राम द्वारा रावण को मार देने के पश्चात् लंका का राजा बनाया गया था।

16. सीता और लक्ष्मण, तोलु बोम्मालट्टा, आन्ध्र प्रदेश

इस चित्र में, पंचवटी में, सीता और लक्ष्मण को देखा जा सकता है। रामायण के अनुसार पंचवटी से राम और लक्ष्मण को हटाने के लिए रावण ने मारीच को एक सुंदर हिरण के रूप में भेजा। काफी पीछा करने के पश्चात्, राम हिरण को मार देते हैं, जो मरते हुए राम की आवाज में लक्ष्मण का नाम लेकर चीखता है। सीता चीख सुन कर लक्ष्मण से राम को ढूंढ कर लाने का निवेदन करती है। अनिच्छुक लक्ष्मण जाने से पहले कुटिया के बाहर एक रेखा खींचता है और सीता को उस रेखा के पार जाने से मना करता है। इस रेखा को 'लक्ष्मण रेखा' के नाम से जाना जाता है।

17. रावण, सीता तथा हनुमान, तोलु बोम्मालट्टा, आंध्र प्रदेश

प्रस्तुत चित्र में दर्शाया गया दृश्य रामायण का एक अंश है। रावण ने सीता का अपहरण करने के पश्चात् उसे अपने महल के अशोक वन में रखा था।

चित्र में रावण सीताजी से कह रहा है कि वह उससे विवाह कर ले। भगवान राम का दूत बन कर आए हनुमानजी को वृक्ष के पत्तों में छिप कर रावण-सीता संवाद को सुनते दिखाया गया है।

18. परिचालन, तोलु बोम्मालट्टा, आंध्र प्रदेश

तोलु बोम्मालट्टा की छाया पुतली नाटक की कला सबसे प्राचीन होने के साथ-साथ समृद्ध भी है। इसकी पुतलियां आकार में बड़ी होने के अलावा कमर, कंधों, कोहनियों और घुटनों से संधियुक्त होती हैं। इस कारण परिचालक को खड़े हो कर इन का परिचालन करना पड़ता है। ये पुतलियां चूंकि रंगीन होती है। इस कारण पर्दे पर ये रंगीन छाया फेंकती है।

19. राम, सीता और लक्ष्मण, रावणछाया, ओड़िशा

ओड़िशा की छाया पुतली भारत की अत्यधिक रोमांचकारी नाटकीय छाया पुतली कलाओं में से एक है। वहां के छाया पुतली नाटक को रावणछाया कहते हैं। ये पुतलियां मृग-छाला की बनी होती हैं तथा इनका आकार अन्य छाया पुतलियों से काफी छोटा होता है। ये मोटी होने के साथ-साथ अपारदर्शी भी होती हैं इसी कारण पर्दे पर इनकी छाया श्वेत-श्याम पड़ती है।

प्रस्तुत चित्र में रावणछाया पुतलियां जो दृश्य प्रस्तुत कर रही हैं उसमें खेवट नाव में राम, लक्ष्मण और सीता को नदी पार करा रहा है।

20. रावण और सीता, रावणछाया, ओड़िशा

प्रस्तुत चित्र में असुर राजा रावण को उसके दस सिर तथा बीस भुजाओं सहित वास्तविक रूप में देखा जा सकता है, जो पंचवटी से सीता का हरण करने के लिए तैयार है। मारीच ने जब हिरण का रूप धारण कर पंचवटी से राम को हटा दिया तब रावण तपस्वी के वेश में पंचवटी आया। लक्ष्मण ने कुटिया में सीता को छोड़ कर जाने से पहले उसकी सुरक्षा के लिए कुटिया के बाहर एक रेखा- 'लक्ष्मण रेखा' खींची थीं और उसे रेखा पार करने के लिए मना किया था। पर सीता ने जब तपस्वी को देखा तो वह उसे भिक्षा देने के लिए रेखा पार कर बाहर आई और इस प्रकार रावण के जाल में फंस गई।

21. रावण और सीता, रावणछाया, ओड़िशा

रावण सीता का हरण करने के बाद उसे अपने रथ पर बैठा कर लंका की ओर ले गया। शोकातुर सीता ने मार्ग के वृक्षों और नदियों से प्रार्थना की और राम को उसकी इस दशा की सूचना देने के लिए कहा। सीता के रूदन ने एक विशाल पक्षी-जटायु का ध्यान आकर्षित किया, जिसने सीता को बचाने की कोशिश करते हुए रावण पर हमला किया। कड़े संघर्ष के बाद रावण जटायु के पंख काटने में सफल हो गया।

प्रस्तुत चित्र में जटायु के साथ हुए संघर्ष के बाद रावण को फिर से लंका जाने के लिए अपने रथ पर वापस आते हुए दिखाया गया है।

22. बाली और सुग्रीव, रावणछाया, ओड़िशा

रावणछाया पुतली शैली के इस चित्र में दो वानर राजाओं, बाली तथा सुग्रीव को, एक-दूसरे के साथ लड़ते हुए दिखाया गया है। रामायण के अनुसार बाली और सुग्रीव दोनों मायावी नामक एक राक्षस से लड़ने गए थे। जब मायावी एक गुफा में लुप्त हो गया तब बाली ने उसका वहां पीछा किया और सुग्रीव बाहर इंतजार करता रहा। एक वर्ष के लंबे इंतजार के बाद सुग्रीव यह मान कर वापस आ गया कि बाली को राक्षस ने मार दिया है और तब से सुग्रीव ने राज्य पर शासन करना आरंभ कर दिया। पर बाली मायावी राक्षस को मारने के पश्चात् वापस आ गया और उसने सुग्रीव को राज्य हड़पने के लिए दोषारोपित किया।

23. हनुमान, रावणछाया, ओड़िशा

प्रस्तुत चित्र में वानर देवता हनुमान को उनकी 'गदा' के साथ देखा जा सकता है। हनुमान को वायु का पुत्र माना जाता है और उन्हें शक्ति तथा भक्ति का प्रतीक कहा जाता है। रामायण का एक प्रसंग हनुमान की शक्ति के विषय में हमें बताता है कि जब लड़ाई में लक्ष्मण घायल हो गए, तब हनुमान को कुछ औषधीय जड़ी-बूटियां लाने के लिए हिमालय पर भेजा गया था। हनुमान जब उस जड़ी-बूटी को पहचान नहीं सके तो वे पूरा पर्वत उठा कर युद्ध भूमि में ले आए, जिसमें से जड़ी-बूटी देने पर लक्ष्मण को होश आया।

24. परिचालन, रावणछाया, ओड़िशा

प्रस्तुत चित्र में रावणछाया पुतली का मंच के पीछे से परिचालन करते हुए दिखाया गया है। कार्यक्रम प्रस्तुतकर्ता पर्दे के पीछे जमीन पर पालथी मार कर बैठते हैं और अपने दोनों हाथों की तेज गति से पुतलियों को परिचालित करते हैं। चूंकि ये पुतलियां एक ही टुकड़े से बनी होती हैं और इनमें कोई जोड़ नहीं होता इसलिए इन्हें परिचालित करने की तकनीक अन्य छाया पुतलियों की तुलना में भिन्न होती है।

पुतली कला
The Art of Puppetry
1

1. Glove Puppet, Pavakathakali, Kerala

The tradition of glove puppets in India is popular in Uttar Pradesh, Odisha, West Bengal and Kerala and is as old as that of the string puppets. Glove puppets are also known as sleeve, hand or palm puppets and have their head made of either papier mache, cloth or wood with two hands emerging from just below the neck. The rest of the figure consists of a long flowing skirt.

In this picture, we can see the basic wooden puppet figure from Kerala known as Pavakathakali (Pava means a doll). Pavakathakali came into existence in the 18th century due to the influence of Kathakali, the famous classical dance drama of Kerala.

2. Krishna and Duryodhana, Pavakathakali, Kerala

The themes, chosen for Pavakathakali are the same as those of Kathakali, the traditional dance drama of Kerala which dramatises stories from Indian myths and legends. The head-dress and the costumes of the puppets are similar to those worn by Kathakali artists. Even the music, themes, stories and colour symbolism are similar to the Kathakali form.

In this picture, Lord Krishna is shown along with Duryodhana, the eldest of the Kaurava princes. While Krishna's face is painted in green, to show that he is a noble character. Duryodhana's face has been painted black which symbolises an evil being.

3. Panchali, Pavakathakali, Kerala

Puppet theatre plays a significant role in communicating aesthetic and moral values while providing entertainment to the masses. Panchali, the daughter of King Draupada of Panchala and the wife of the Pandavas is seen in the picture. Even the female characters of Pavakathakali have striking similarities to Kathakali female characters.

4. Duryodhana, Pavakoothu (Kathakali), Kerala

As in *Kathakali*, there is also a class demarcation between good and evil characters in Pavakoothu. The noble characters are painted green and are called *paccha* while the evil characters are identified by the knobs on their faces and the colour of their beard.

In this picture, you see Duryodhana, the eldest of the Kauravas and the king of Hastinapur. He has been shown with knob on his nose and black paint on his face which depicts that he is an evil character.

5. Bhima, Pavakoothu (Kathakali), Kerala

Traditional puppet theatre all over India basically derives its themes from popular myths and legends. In this picture, we can see Bhima, the second and the strongest of the Pandava brothers of *Mahabharata*. It is said that Bhima was born to Kunti and Pandu by invoking *Vayu*, the god of wind.

Bhima's face is painted green. All noble characters in Kathakali are painted green.

6. Rama, Tholpavakoothu, Kerala

Tholpavakoothu is the traditional shadow puppet of Kerala. The themes of Tholpavakoothu are mainly taken from the episodes of the *Ramayana*. The puppets of Tholpavakoothu are made of deer skin. The figures are drawn on skin, cut out and embellished with dots, lines and holes and are painted in different colours. Then a white screen is illuminated with the help of oil lamps and shadows of these figures are projected on the screen.

In this picture, you see Lord Rama, the central character of the epic, '*Ramayana.'* Rama is regarded as an *Avatara* of Lord Vishnu and is worshipped by Hindus all over the world.

7. Sita, Tholpavakoothu, Kerala

The puppet shown in the picture is that of Sita, the daughter of Janaka, the king of Mithila and the wife of Lord Rama. Sita spent many years with her husband, Rama at Ayodhya before accompanying him to the forest during his period of exile. The perforations punched on the leather highlights the details of costumes and ornaments. The manipulation of these puppets require little effort. The puppets are pinned onto the screen, the arms are moved to indicate which character is speaking.

8. Ravana, Tholpavakoothu, Kerala

This picture shows Ravana, the king of Lanka and one of the main characters of the '*Ramayana'*. Ravana is regarded as the Lord of the *Rakshasas* and is portrayed as an evil character in the *Ramayana.* Ravana possessed mystical powers due to a boon granted to him after he had spent many years on meditation. Here, he is shown with his ten heads.

9. Shiva, Tholpavakoothu, Kerala

This picture shows Lord Shiva. The figure is very realistically made. Decorative motifs such as jewellery and weapons are perforated and carefully chiselled to make them look realistic. The puppet is a delicate work of art.

10. Manipulation, Tholpavakoothu, Kerala

In this picture, we can see the manipulation behind the screen of Kerala shadow puppets. The fight scene shown between Ravana and Hanuman is taken from an episode of the *Ramayana.*

The manipulation requires very little effort as only the hands are manipulated to indicate which character is speaking. Unlike, the Odisha puppets, these puppets have jointed areas at the elbows thus giving freedom for a variety of movements.

11. Hanuman, Togalu Gombeyatta, Karnataka

The Hanuman shown in this picture is taken from Togalu Gombeyatta*,* the shadow puppet theatre of Karnataka. Shadow puppets are flat figures, cut out of leather which has been treated and made translucent. The details are chiselled out carefully on the single piece of leather from which this puppet is made. This highlights the facial features, costumes and ornamentations.

The features of the shadow puppets of Karnataka is that their size differs according to their social status. Kings and religious characters are depicted as larger than the common people and servants.

Hanuman, the son of *Vayu* and the most trusted aid of Lord Rama is revered and worshipped by Hindus.

12. Ganesh, Togalu Gombeyatta, Karnataka

Puppet making is a highly sophisticated art and this colourful picture of the elephant God Ganesh is a good example. According to Hindu traditions Lord Ganesh is the remover of all obstacles. Mythology tells us that he is the son of Lord Shiva and Parvati and is one of the most loved gods of the Hindu pantheon. Hindus, before undertaking any auspicious work evoke the blessing of Lord Ganesh by offering *poojas*.

13. Ravana, Togalu Gombeyatta, Karnataka

This picture depicts the *Asura* King Ravana in full battle gear. Ravana possessed mystical powers due to a boon granted to him by Lord Brahma, the creator of the universe. Ravana is said to possess ten heads and twenty arms, but this picture depicts him with ten heads and only two arms. This must have been done for the convenience of the puppeteer for easy manipulation.

14. Ravana and Sita, Togalu Gombeyatta, Karnataka

This shadow puppet from Togalu Gombeyatta of Karnataka shows the *Asura* king Ravana abducting Sita and taking her to Lanka in his chariot. Ravana came to *Panchavati* disguised as an ascetic and showed his true identity before abducting Sita and carrying her to his chariot. Here, Ravana is depicted as an evil character with his teeth sticking out of his mouth. Notice the clothing, ornaments and hair are painted to make them look prominent.

15. Rama, Vibhishana and Hanuman, Tholu Bommalatta, Andhra Pradesh

Tholu Bommalatta is the shadow puppet theatre of Andhra Pradesh. The puppets are large in size and have jointed waist, shoulders, elbows and knees. They are coloured on both sides, hence, these puppets throw coloured shadows on the screen.

The picture shows Ravana's brother Vibhishana and his wife along with Rama and Hanuman during the coronation ceremony of Vibhishana after Lord Rama had killed Ravana in the battle of Lanka.

16. Sita and Lakshmana, Tholu Bommalatta, Andhra Pradesh

In this picture, we see Lakshmana and Sita at *Panchavati.* Ravana sends Maricha disguised as a beautiful deer to lure out Rama from *Panchavati.* After a long chase. Rama kills the deer, who yells out the name of Lakshmana in the voice of Rama. Sita hearing the cry pleads with Lakshmana to go in search of Rama. A reluctant Lakshmana before leaving draws a line, forbidding Sita to cross it. This line is known as the *"Lakshmana Rekha.'*

17. Ravana, Sita and Hanuman, Tholu Bommalatta, Andhra Pradesh

The scene depicted in this picture is taken from an episode of the *Ramayana*. Ravana after abducting Sita, housed her in his palace garden named *Ashokavan.*

This picture shows Ravana at *Ashokavan* asking Sita to marry him. Hanuman who had come to Lanka as Lord Rama's emissary at that time is seen hiding in the branches of the Ashoka tree listening to the conversation.

18. Manipulation, Tholu Bommalatta, Andhra Pradesh

Tholu Bommalatta*,* the shadow puppet theatre has the richest and strongest tradition since the puppets are larger in size and have jointed waist, shoulders, elbows and knees, the puppeteers have to stand in order to manipulate these puppets. These puppets are colourfully painted thus throwing coloured shadows on the screen.

19. Rama, Sita and Lakshmana, Ravanachhaya, Odisha

One of the most theatrically exciting forms of shadow puppetry in India is that of Odisha. The shadow puppet theatre of Odisha is called *Ravanachhaya.* The puppets are made of deer skin and are smaller in size than other shadow puppets. They are thick and opaque and throw black and white shadows.

This picture shows the Ravanachhaya puppets performing a scene from the Ramayana showing Khevat sailing the boat carrying Rama, Lakshmana and Sita to get the river crossed.

20. Ravana and Sita, Ravanachhaya, Odisha

This picture shows the *Asura* King Ravana in his real form with his ten heads and twenty arms, all set to abduct Sita from *Panchavati.* Ravana had come to *Panchavati* disguised as an ascetic after Maricha had assumed the form of a deer and lured away Rama from *Panchavati.* Lakshmana before leaving Sita had drawn a line. *'Lakshmana Rekha'* for her protection, forbidding her to cross it. However, seeing an ascetic, Sita crossed the line to offer him food, thus falling into the trap laid by Ravana.

21. Ravana and Sita, Ravanachhaya, Odisha

After Ravana had abducted Sita, he carried her in his chariot towards Lanka. A heartbroken Sita invoked the trees and the rivers to tell Rama of her plight. Her desperate cries caught the attention of Jatayu, a huge bird who came to her rescue and attacked Ravana. After a tough fight, Ravan a succeeded in cutting Jatayu's wings. This picture shows Ravana coming back to his chariot after the fight to resume his onward journey to Lanka.

22. Bali and Sugriva, Ravanachhaya, Odisha

This picture from Ravanachhaya shows the two monkey kings. Bali and Sugriva fighting each other. According to *Ramayana,* both Bali and Sugriva had gone to fight a demon called Mayavi. While Mayavi disappeared into a cave, Bali followed him there and Sugriva waited outside. After a year long wait, Sugriva returned presuming that Bali was killed by the demon and started ruling his kingdom. But Bali came back after killing Mayavi and accused Sugriva of usurping his kingdom.

23. Hanuman, Ravanachhaya, Odisha

This picture shows the monkey God Hanuman with his Mace or *'Gadda'.* Hanuman is regarded as the son of *Vayu* and is considered as an epitome of strength and devotion. An episode in *Ramayana* tells us of his prowess. When Lakshmana was injured in the battle, Hanuman was sent to the Himalayas to fetch some medicinal herbs. Unable to recognise them, Hanuman uprooted the whole mountain and brought it to the battle field which helped in reviving Lakshmana.

24. Manipulation, Ravanachhaya, Odisha

In this picture, back stage manipulation of Ravanachhaya puppet is shown. The performers squat on the ground behind the screen and manipulate the puppets using both hands and fast movements. As the puppets are in one piece and have no joints, the technique of manipulation is different from other shadow puppets.